महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा की पी.एच.डी. (हिन्दी)

उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध–प्रबंध

THE MAHARAJA SAYAJIRAO UNIVERSITY OF BARODA

सत्यं शिवं सुन्दरम्

"प्रवासी हिंदी साहित्यकार रामदेव धुरंधर के उपन्यासो में भारतीय संस्कृति एवं परिवेश बोध"

शोध–छात्र

अमित कुमार गुप्ता

नामांकन संख्या – F0A1510 दिनांक–25-1-2020

31-12-2022 31/12/22

शोध–निर्देशक

डॉ. कनुभाई विछियाभाई निनामा

प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, कला संकाय

महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा (गुजरात)

DEAN
FACULTY OF ARTS
The M.S. University of Baroda
Vadodara - 390002

२०२२

31/12/2022

Prof. KALPANA GAVLI
Head & Professor
Department of Hindi, Faculty of Arts
The Maharaja Sayajirao University of Baroda

Prof. ...
Department ...
The Maharaja Sa...
Vadodara - ...002.

महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा पीएच.डी. (हिंदी) उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध–प्रबंध का कार्यकारी सारांश (Executive Summary)

प्रवासी हिंदी साहित्यकार रामदेव धुरंधर के उपन्यासों में भारतीय संस्कृति एवं परिवेश बोध

शोधार्थी -

अमित कुमार गुप्ता

शोध निर्देशक

डॉ. कनुभाई निनामा

प्रोफेसर

हिंदी विभाग, कला संकाय

महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा (गुजरात)

2023

'प्रवासी हिंदी साहित्यकार रामदेव धुरंधर के उपन्यासों में भारतीय संस्कृति एवं परिवेश बोध'

अनुक्रमणिका :-

क्रम	अध्याय	विषय	पृष्ठ संख्या
1.	प्रथम अध्याय	प्रवासी हिंदी साहित्यकार	पृ.6 से 64
2.	द्वितीय अध्याय	रामदेव धुरंधर व्यक्तित्व एवं कृतित्व	पृ. 69 से 108
3.	तृतीय अध्याय	रामदेव धुरंधर के उपन्यासों में भारतीय संस्कृति एवं परिवेशबोध	पृ.111 से 143
4.	चतुर्थ अध्याय	रामदेव धुरंधर के उपन्यासों में भारतीय संस्कृति एवं परिवेशबोध	. पृ.147 से 177
5.	पंचम अध्याय	रामदेव धुरंधर के उपन्यासों की समस्याएँ	. पृ.180 से 205

.6.	षष्ठ अध्याय	रामदेव धुरंधर के उपन्यासों में कला पक्ष एवं भावपक्ष	.पृ.208 से 238
7.	उपसंहार		.पृ.241 से 251
8.	साक्षात्कार		पृ.255 से 280
9.	परिशिष्ट		पृ.280 से 282
10.	संदर्भ-ग्रन्थ सूची .		पृ.283 से 293
11.	पत्र-पत्रिकाएँ		पृ.294

शोध-प्रबंध का संक्षिप्त विवरण :- (Executive Summary)

प्रवासी साहित्य हिंदी का साहित्य है जिसका रंग-रूप, उसकी चेतना और संवेदना भारत के हिंदी पाठकों के लिए नई वस्तु है। एक नये भाव बोध का साहित्य है एक नई व्याकुलता और बेबसी का साहित्य है, जो हिंदी साहित्य को अपनी मौलिकता एवं नये साहित्य संसार से समृद्ध करता है। इस प्रवासी साहित्य की बुनियाद भारत प्रेम तथा स्वदेश-परदेश के द्वंद्व पर टिकी है।' **कमल किशोर गोयनका**

हिंदी साहित्य को विश्वव्यापी बनाने के लिए साहित्य प्रेमी अनेक देशों में रहकर भी अपने गुणवत्तापूर्ण साहित्य से हमें अवगत कराते हैं। ऐसे साहित्यकार हमारे देश में प्रवासी कहलाते हैं। इसके अलावा भारत से इतर देशों में रह रहे भारतवंशी हिंदी को विश्व के कोने- कोने तक पहुँचाकर

हिंदी भाषा के विस्तार के साथ साथ हिंदी का विकास भी कर रहे हैं। प्रवासी साहित्य में रचनात्मक साहित्य अधिक लिखा गया है।

अपेक्षाकृत आलोचनात्मक साहित्य के आलोचक कमलेश्वर ने प्रवासी साहित्य पर टिप्पणी करते हुए कहा था कि "रचना अपने मानदंड खुद तय करती है, इसलिए उसके मानदंड बनाये नहीं जाएंगे। उन रचनाओं के मानदंड तय होंगे। प्रवासी लोगों की तीन कोटियां बनायी जा सकती है। एक श्रेणी में ये लोग है जो गिरमिटिया मजदूरों के रूप में फीजी, मॉरीशस, त्रिनिडाड, गुयाना, दक्षिण अफ्रीका आदि देशों में भेजे गये थे। दूसरी श्रेणी में 80 के दशक में खाड़ी देशों गये अशिक्षित-अद्धशिक्षित कुशल अथवा अद्धकुशल मजदूर आते हैं। तीसरी श्रेणी में 80-90 के दशक में गए सुशिक्षित मध्यवर्गीय लोग हैं। तीनों श्रेणी के प्रवासी अपने-अपने कर्तव्य से निमुख नहीं हुए हैं, ये हिंदी साहित्य की सेवा तल्लीनता पूर्वक की गई।

विदेशों में रहने वाले हिंदी साहित्यकारों के योगदान के कारण आज हिंदी साहित्य अपनी पूर्णता की एक कड़ी को अपने में समाहित कर अपने फलक का विस्तार कर रहा है। आज प्रवासी रचनाकारों की रचनाएँ इस कारण महत्व पूर्ण है, क्योंकि उनकी रचनाओं में भिन्न-भिन्न देशों की परिवेशगत परिस्थितियों का उल्लेख मिलता है। लेखक जिस परिवेश प्रकृति और समाज के बीच रहकर बड़ा हुआ है, उनकी लेखनी में उस परिवेश का प्रतिबिंब तो अवश्य आएगा। हिंदी साहित्य के अनेक रचनाकारों का लगाव गाँवों से रहा है। उनकी साहित्य में मिट्टी की महक मिलती है। लेखक अपने परिवेश और समाज में जीकर बड़ा हुआ है। प्रवासी हिंदी लेखक अपनी संवेदनाओं, भावनाओं को अस्तित्व का आधार बनाता है। इस पर भी लेखक गाँव से शहर शहर से गाँव, भारत से अमेरिका आदि कहीं की भी संवेदनाओं, कथा, पात्रों और समस्याओं को अपने साहित्य में स्थान दे सकता है। निश्चय ही संवेदनाओं और भावनाओं की कोई सीमा नहीं, उनकी कोई परिधि नहीं, उन पर कोई बंधन नहीं।

यदि सूक्ष्मता से देखा जाये तो वस्तु ही अभिव्यक्ति के स्वरूप को तय करती है। वस्तु अर्थात् संवेदना के स्वरूप को मर्म को जाने बिना उसकी अभिव्यक्ति को सही या गलत बताना अनुचित हो सकता है।

जब भी हिंदी के प्रवासी साहित्य का मूल्यांकन होगा, उसे संवेदना के अस्तित्व की कसौटी से गुजरना होगा। भारतीय मूल के लोग समस्त विश्व में फैले हुए हैं, उन्होंने विदेशों को अपनी बनाया है यह बात नवीन नहीं है। प्रवासी साहित्य भी नवीन नहीं है, परन्तु बीसवीं शताब्दी प्रवासी भारतीयों ने भारतीयता की अस्मिता को जिंदा रखने की भरसक कोशिश की है।

19 वी सदी में जो भारतीय विदेश गये उनमें अधिकतर हिंदी भाषी क्षेत्र से ही गये थे। अपनी भूमि को छोड़कर विदेश गये व्यक्ति पीढ़ी-दर-पीढ़ी प्रवासी ही रहता है। प्रवासी अपने का सामान्य से अलग अनुभव करता है। वह अपनी भाषा और अपनी संस्कृति को पकड़े रहना चाहता है पर

उसकी विवशता है। नये देश को अपनाने की उसे अपना बनाने की। क्योंकि उसको उसी देश में रहना है। यह दुनिया और विवशता ही प्रवासी भारतीयो के साहित्य अभिव्यक्ति की मूल संवेदना के रूप में उभरकर आती है। फीजी के राष्ट्रपति कमलाप्रसाद मिश्र की कविता 'क्या मैं परदेशी हूँ में यह संवेदना व्यक्त हुई है।

"घवल सिंधु तट पर में बैठा अपना मानस बहलाता

फीजी में पैदा होकर भी मैं, परदेशी कहलाता

यह है गोरी नीति, मुझे सब भारतीय अब भी कहते

यद्यपि तन मन, धन से मेरा फीजी से ही है नाता

भारत के जीवन से फीजी के जीवन में अंतर है

भारत कितनी दूर यहाँ पर कौन सदा जाता आता

औपनिवेशिक नीति गरल है, नहीं हमें जीने देती

वे उससे ही खुश रहते हैं, जो उनका यश है माता

भारतीय वंशज पग-पग पर पाता है केवल संकट

जंगल को मंगल करके भी दो क्षण चैन नहीं पाता

साहस है हम सब सह लेगे हम भयभीत नहीं होंगे

पता नहीं कब गति बदलेगा कालचक जग का त्राता।"

प्रवासी भारतीय हिंदी साहित्य इतिहास लगभग का डेढ़ सौ वर्षों का है, और यह साहित्य मूल रूप से भारतीयों के विदेश आगमन, उनके संघर्ष और विकास की गाथा कहा जा सकता है। प्रवासी हिंदी साहित्य की मूल संवेदना प्रवास की पीड़ा है, जो प्रवासी हिंदी साहित्य में मुख्य रूप से व्यक्त हुई है। प्रवास में जहाँ एक ओर व्यक्ति के मन में नई जगह जाने का उत्साह होता है, नई आशाएँ, अपेक्षाएँ है, वहीं दूसरी ओर अपनों से बिछुड़ने की पीड़ा है, अपनी धरती का विछोह और विस्थापन का कष्ट होता है। यदि नया वातावरण व्यक्ति के अनुकूल सुख-सुविधा संपन्न हुआ तो यह विछोह की पीड़ा को धीरे-धीरे भुलाकर उसी वातावरण में ढलने लगता है और यदि प्रवास व्यक्ति की आशा के अनुरूप नहीं होता है तो वहीं प्रवास व्यक्ति के लिए कष्टकारी लगने लगता है। इन प्रवासी भारतीयों को दूर देशों में आर्थिक संकटों के साथ साथ अपनी बत्ती, अपने घर-परिवार से दूरी, अमानवीय शारीरिक यातनाओं और लोगो के बेगानेपन को झेलना पड़ा है। प्रवासी साहित्यकारों ने अपने

साहित्य में इन्ही संवेदनाओं को सहेजने का प्रयास किया है। मॉरीशस के अभिमन्यु अनत के साहित्य में समाज और परिवेश का घोर संत्रास जीवत रूप में दिखाई पट्टा वह स्वयं उनका देखा और भोगा हुआ है। अभिमन्यु अनत कहते हैं-"मेरी रचना मेरी अपनी भावनाओं की कोई पिटारी नहीं रही हैं। उसमें मेरी वह पूरी जिंदगी है जिसमें मैंने कई रातें बिना खाये बितायी हैं। बेकारी की यातना को भोगा है व्यवस्था की अवस्था में उन सारे दारुण दंडों को भोगते हुए लोगों की यातनाओं का महसूसा है और मानसिक स्तर पर झेला भी है।

इस प्रकार से प्रवासी हिंदी साहित्य में प्रवासी भारतीयों तथा वहाँ के मूल निवासियों की मानवीय संवेदनाओं को देखा जा सकता है। प्रस्तुत शोध-प्रबंध में मैंने प्रवासी साहित्यकार रामदेव धुरंधर को विशेष रूप से चित्रित किया है।

शोध-प्रबंध का संक्षिप्त विवरण .(Executive Summary)

प्रस्तुत शोध -प्रबंध में मैंने निम्नलिखित शोध-प्रविधियों का चित्रण किया है -

1.अन्तरानु शासनात्मक अनुसंधान -

इस तरह के अनुसन्धान का प्रयोग मैंने मेरे शोध-प्रबंध में किया है। आज के वैश्वीकरण और सूचना प्रौधोगिकी के दौर में इस पद्धति का महत्व अधिक बढ़ गया है। इस पद्धति का प्रयोग करके विश्व की अलग-अलग संस्कृति का अध्ययन किया जाता है। मैंने गहन अध्ययन करके मॉरीशस तथा भारतीय संस्कृति आदान -प्रदान करने का संभवित प्रयास किया है l

2. गुणात्मक अनुसंधानात्मक पद्धति :-

इस पद्धति में शोध के क्षेत्र में ज्ञान को विकसित किया जाता है। मैंने मेरे शोध -प्रबंध में गुणात्मक अनुसंधानात्मक पद्धति द्वारा मॉरीशस तथा भारतीय विषयक ज्ञान को विकसित करने का उपक्रम रखा है। छोटे-छोटे उदाहरणों के द्वारा मैंने नया ज्ञान विकसित किया है l

3. विश्लेषणात्मक अनुसंधान पद्धति :-

इस अनुसंधान पद्धति के अंतर्गत शोध-प्रबंध में एकत्रित माहिती को समीक्षक की दृष्टि से विवेचित किया जाता है। मैंने इस शोध -प्रबंध के सामान्य विषयों को समझा है और पाठकों के साथ सम्प्रेषित करने का प्रयास किया है। मैंने रामदेव धुरंधर के साथ साक्षात्कार के द्वारा प्राप्त डेटा का विश्लेषण किया है। शोध कार्य के दौरान संकलित तथ्यों का विश्लेषण एवं व्याख्या शोध का महत्वपूर्ण स्थान है। वैज्ञानिक परिणाम प्राप्त करने के लिए तथ्यों का विश्लेषण तथा व्याख्या में घनिष्ठ संबंध है l विश्लेषण का प्रमुख कार्य व्याख्या की तैयारी करना है। अर्थात विश्लेषण का कार्य जहाँ समाप्त हो जाता है ,वहीं से व्याख्या शुरू होती है l

4. विवरणात्मक अनुसंधान पद्धति :-

इस तरह की शोध पद्धति के अंतर्गत जो समाज में परिस्थितियाँ हैं, उनका उसी ही रूप में शोधार्थी द्वारा प्रस्तुतिकरण किया जाता है। इसमें तथ्यों का संकलन महत्वपूर्ण हैं। इसे वर्णनात्मक पद्धति भी कहा जाता है। इसके संदर्भ में डॉ. विनय मोहन शर्मा ने बताया कि-'व्याख्यात्मक या वर्णनात्मक शोध में मानव जीवन की सभी वर्तमान समस्याओं पर, चाहे वे साहित्य, समाज विज्ञान या शुद्ध विज्ञान से संबंध रखती हो, अनुसंधान किया जाता है। इस अनुसंधान का मुख्य उद्देश्य मामलों की स्थिति का वर्णन है क्योंकि यह वर्तमान में मौजूद होता है। 'प्रस्तुत शोध-प्रबंध में मैंने इस पद्धति का भी प्रयोग किया है ।

शोध-प्रबंध का विवरण :-

नये प्रवासी देशों में अमेरिका ब्रिटेन, कनाडा, जापान, रूस, फिजी, त्रिनिदाद, टोबेगो, सूरीनाम मॉरीशस इत्यादि कई स्थानों में शिक्षा और रोजगार के लिए जानेवाले प्रवासी, जो विदेश गये थे अपने देश की संस्कृति, विश्वास तथा भाषा के प्रति समर्पित रहे और प्रवासी भारतीयों ने अपनी मातृभाषा में अपनी अनुभूति को स्वर दिया।

सभी प्रवासी देशों में मॉरीशस का नाम प्रमुखता से लिया जाता है। प्रवासी हिंदी साहित्य में सबसे अधिक लेखन कार्य मॉरीशस में हुआ है, वैसे तो मॉरीशस में भारतीयों का प्रवास गिरमिटिया मजदूरों के रूप में हुआ है। अतः यहाँ भारतीयों ने शोषण से सघर्ष की लम्बी यात्रा तय की है।

मुझे प्रवासी साहित्य पर पहले से रुचि थी, उसमें भी विशेष मॉरीशस के साहित्य पर मैंने मॉरीशस के साहित्यकार रामदेव धुरंवर का चुनाव किया। मॉरीशस में हिंदी साहित्य का विस्तृत भंडार है मुख्य लेखकों में सोमदत्त बुखारी, ब्रजेन्द्र कुमार ,भगत मधुकर ,बासुदेव विष्णु दयाल ,अभिमन्यु अनत, रामदेव धुरंधर इत्यादि। मैंने मेरे शोध-प्रबंध की भूमिका में प्रवासी साहित्य का अर्थ, प्रवात्ती साहित्यकार, संस्कृति आदि का विश्लेषण करने का प्रयास किया है। मेरे शोध-प्रबंध का विषय **'प्रवासी हिंदी साहित्यकार रामदेव धुरंधर के उपन्यासों में भारतीय संस्कृति एवं परिवेश बोध'** है जिनको मैंने निम्नलिखित अध्यायो में बांटा है-

प्रथम अध्याय प्रवासी हिंदी साहित्य, प्रदासी हिंदी साहित्य की अवधारणा, नामकरण, स्वरूप एवं विकास प्रवासी साहित्यकारों का सामान्य परिचय प्रवासी साहित्य का मूल उद्देश्य, मॉरीशस के साहित्यकारों का परिचय एव योगदान।

द्वितीय अध्याय- रामदेव धुरंधर का व्यक्तित्व एवं कृतित्व रामदेव धुरंधर का जन्म, शिक्षा और सम्मान रामदेव धुरंधर की प्रमुख रचनाओं का सामान्य परिचय, रामदेव धुरंधर के उपन्यासों के नाम।

तृतीय अध्याय रामदेव धुरंधर के उपन्यासों में भारतीय संस्कृति एवं परिवेश बोध 'छोटी मछली बड़ी मछली' (रहन-सहन, पोशाक, धार्मिक त्यौहार, बाल पर्व, विवाह लोकगीतों में संस्कृति, लोक कथाओं में संस्कृति) 'चेहरों का आदमी' (रहन-सहन, पोशाक, धार्मिक त्यौहार, बाल पर्व, विवाह लोकगीतों में सरकृति लोक कथाओं में सरकृ ति) बनते बिगड़ते रिश्ते (रहन-सहन, पोशाक, धार्मिक त्यौहार, बाल पर्व, विवाह लोकगीतों में संस्कृति, लोक कथाओं में संस्कृति)

चौथा अध्याय- रामदेव दुरंधर के उपन्यासों में भारतीय एवं परिवेश बोध 'पूछो इस माटी से' (रहन-सहन, पोशाक मार्मिक त्यौहार पर्व विवाह लोकगीतों में संस्कृति, लोक काप्पाओं में संस्कृति) 'पथरीला सोना ' (वृहत ७. खण्डीय) (रहन-सहन, पोशाक, धार्मिक त्यौहार, बाल पर्व, विवाह, लोकगीतों में संस्कृति लोक गीतों में संस्कृति) विराट के वासिंदे , 'ढलते सूरज की रोशनी।'

पाँचवा अध्याय- रामदेव धुरंधर के उपन्यासों की समस्याएँ के अंतर्गत - भारतीय मजदूरों के उत्पीडन की समस्या , वतन से दूर होने की पीड़ा-गिरमिटिया मजदूरी का जीवन एवं उसकी समस्याओं का निरूपण ,

सामाजिक समस्याएँ।

स्त्रियों की समस्याएँ।

वृद्धों की समस्याएँ।

बच्चों की समस्याएँ।

रोजगार की समस्याएँ।

राजनीतिक समस्याएँ।

छठवाँ अध्याय- रामदेव धुरंबर के उपन्यासों में कला पक्ष एवं भाव पक्ष

-उपन्यासों की भाषा शैली।

-उपन्यासों में भाव सौन्दर्य।

भारतीय भाषाओं का प्रभाव।

-विदेशी माषाओं का प्रभाव।

- शब्द संरचना

परिशिष्ट-

1. साक्षात्कार

2. संदर्भ ग्रंथ सूची

उपसंहार-

प्रथम अध्याय में मैंने निम्नलिखित मुद्दों को लेकर समीक्षा करने का प्रयत्न किया। प्रवासी हिंदी साहित्य के अन्तर्गत प्रवासी हिंदी साहित्य की अवधारणा को मैंने स्पष्ट किया।

प्रवासी हिंदी साहित्य की अवधारणा प्रवासी हिंदी साहित्य की अवधारणा स्पष्ट करने से पहले एक प्रश्न उत्पन्न होता रहता है कि यह प्रवास है क्या? प्रवास कहाँ से पैदा हुआ ? आखिर में इस प्रवास तथा प्रवासी साहित्य का क्या महत्व रहता है। इस पर मैंने अपने विचार रखा है। किन्तु हमें सर्वप्रथम प्रवास और प्रवासी को समझना अति आवश्यक है। प्रवास का संधि विच्छेद प्रवासी से मिलकर बना है। 'प्र' का अर्थ उत्कृष्ट रीति और 'बासी' का अर्थ निवासी होता है। अर्थात 'प्रवासी हिंदी साहित्य में प्रवासी का मूल उत्कृष्ट रूप से निवास करने वाला साधारण व्यक्ति होता है। जो अन्यत्र भारत की धरती को छोड़कर किसी अन्य विदेशों में रहकर जीवनयापन करते हैं। जिसे प्रवासी साहित्य कहा जाता है। प्रवासी हिंदी साहित्य एवं रचनात्मक विमर्श है। जितना की कमलेश्वर के साहित्य पर।

नामकरण स्वरूप एवं विकास :-

प्रवासी हिंदी साहित्यप्रवासी का नामकरण बहुत पहले से नामकरण किया जाता है। इसका अनुमान बीते वर्षों पर लगा सकते हैं। इसी नामकरण को लेकर प्रवासी हिंदी साहित्य को 2003 से मनाया जा रहा है अभी हाल ही में भारत सरकार के अनुसार प्रवासी दिवस हर वर्ष के प्रथम माह 10 जनवरी को मनाया गया था फिर भी हम इन नामकरण को लेकर हिंदी लेखन के कार्य को विदेशों तक विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में हिंदी में काम किया जा रहा है। इसमें कोई सन्देह नहीं है। प्रवासी रचनाकारों ने आज विदेश में जाकर बस गए हैं और हिंदी में काम काज कर रहे है। इसमें कोई संदेह नही है।

स्वरूप :-

प्रवासी हिंदी साहित्य के अंतगर्त प्रवासी का स्वरूप अनुशीलन तथा परिणामस्वरूप हिंदी साहित्य में प्रवासी हिंदी साहित्य नए-नए पैमाने को उद्घाटित किया जाता है। इन सभी बिन्दुओं के अन्तर्गत कर सकते है जो इस प्रकार है-

१.वे भारतीय नागरिक जोध्ययन और अध्यापन के लिए विदेश में गए और रहकर प्रत्येक हिंदी के कार्य को लेकर साहित्य की सर्जना की है। उनके द्वार रचित साहित्य की प्रवासी हिंदी साहित्य कहा जाता है।

2. वे भारतीय जो अपने देश से बाहर रहकर रोजगार, उच्च शिक्षा, जीवन स्तर की प्राप्ति व अपनी इच्छा से विदेश गए और वहीं रहकर हिंदी साहित्य के अंतर्गत लेखन कार्य किया।

३ वे ऐसे व्यक्ति जो अपनी मातृभूमि में ही अपने प्रदेश व जनपद के अन्तर्गत यात्रा व बोली क्षेत्र की परिपाटी को अलग करने जब किसी दूसरे प्रान्त, जनपद भाषा में बोली के क्षेत्र में प्रवास करने के बाद प्रवासी हिंदी साहित्य का अध्यन करने लगे।

4. ये प्रवासी भारतीय जो दूतावासों में रहकर हिंदी साहित्य की सेवा करने के लिए विभिन्न साहित्यकारों के प्रवासी साहित्य को अल्तम आयोजन किया जा रहा है। अर्थात् उदाहरण के तौर पर देखा जाय तो प्रवासी हिंदी साहित्य का स्वरूप एक नए पैमाने के साथ है अध्ययन अध्यापन, पर्यटन, रोजगार आदि का समावेश कहते है।

विकास:- प्रवासी हिंदी साहित्य का विकास 20 वीं शताब्दी से पाँचवे दशक के अंतिम वर्षों से आज तक प्रवासी साहित्य का विकास हो रहा है।

1. अमेरिका में प्रवासी साहित्य

2. मॉरीशस का प्रवासी साहित्य

3. इंग्लैण्ड का प्रवासी साहित्य

4. सूरिनाम का प्रवासी साहित्य

मेरे इस शोध प्रबंध के अंत में मैंने उपसंहार आलेख पत्र पत्रिकाओं संदर्भ ग्रन्थ की सूची देने का प्रयत्न किया है।

प्रथम अध्याय के प्रथम खण्ड के अन्तर्गत रामदेव धुरंधर जी ने उस शर्त बन्दी गिरमिटिया मजदूरों का वर्णन किया हैं। जिनको एक मानक के रूप में काम करवाया जाता था और आज भी गिरमिटियों विदेशों में जाकर काम करवाया जाता था। जैसे ही पाँच वर्ष पूरे होते हैं वैसे ही उन्हें पुनः निकाल दिया जाता था। वे लोग पैसा कमाने की लालच में काम करते थे। द्वितीय खण्ड में गिरमिटिया मजदूरों के लिए सहानुभूति तो देते थे। लेकिन वे भारत से कई ग्रन्थों को लेकर सुबह-शाम पूजा पाठ करते थे। चतुर्थ खण्ड के अन्तर्गत सोना में गिरमिटियाँ मजदूरों को यू.पी. और बिहार से लाया गया था। क्योंकि इन्हीं को एक शताब्दी गिरमिटियाँ मजदूर के नाम से जानते हैं। वे असहाय मजदूर घर, परिवार और आर्थिक समस्याओं को दूर करने के लिए विदेश में काम करने के लिए जाते हैं। ताकि उनके घर समाज दूर हो सकें। यह 1947 के घटनाओं पर आधारित है। क्योंकि कई रचनाकारों ने मॉरीशस की पीड़ा व व्यथा को देख और परखा तो रामदेव धुरंधर जी दोनों का विस्थापन किया। पंचम खण्ड के अन्तर्गत रामदेव धुरंधर जी मजदूरों के लिए दुख दर्द को उजाकर किये हैं। ये जमीन को धुरंधर जब ईख की खेती करते थे तब उसी जमीन को धुरंधर जी ने पथरीला

जमीन को पथरीला सोना का नाम पड़ा। इसलिए वे जमीनी स्तर को देखने के लिए वे कई वर्षों से करते हुए चले आ रहे हैं और ऐसे कुछ पूर्वज हैं जो जमीन के बदले में हमें पत्थर ही मिल जाय तो समझिए की सोना है।

छठवें खण्ड में 'पथरीला सोना' 2009 में प्रारम्भिक हुआ तथा वे रेखांकित करते हुए कहते हैं कि इस खण्ड में खलनायक पात्र भी हैं तथा इन सभी पात्र को बनाया नहीं, बल्कि वे पहले से ही खलनायक जैसे थे। ये समाज में रहकर आँखों में सीधा धूल झोंकते थे। इसलिए लेखक ने 6 खण्डों को बाँध दिया। अर्थात् कुल मिलाकर रामदेव धुरंधर जी के उपन्यासों में सामान्य परिचय यही रहा है। जिन्हें छः खण्डों में समेट लिया गया।

दूसरे अध्याय में मैंने रामदेव धुरंधर के व्यक्तित्व तथा कृतित्व पर गहन अध्ययन किया है। उनके जन्म तथा साहित्य पर विस्तृत गहन अध्ययन किया है।

तृतीय अध्याय में मैंने रामदेव धुरंधर के उपन्यासों में भारतीय संस्कृति एवं परिवेश बोध का विश्लेषण किया है। रामदेव धुरंधर के उपन्यासों में भारतीय संस्कृति व परिवेशबोध के अन्तर्गत उनके रहन-सहन, पोशाक, धार्मिक त्यौहार, पर्व, बाल विवाह, लोक गीतों में संस्कृति तथा लोक कथाओं में संस्कृति को समझ सकेंगे। क्यों रामदेव धुरंधर के उपन्यासों में कहीं न कहीं मॉरीशस की रीति रिवाज, खान-पान को समझ पायेंगे। वहाँ का धार्मिक उत्सव एक बड़े पैमाने पर मनाया जाता है। जैसे भारत में हर्षोल्लास मनाते हैं। वैसे वहाँ भी मनाते हैं। बस ये है कि आप मॉरीशस से हैं और भारत से यही मन का हेर-फेर है। वहाँ का पहनावा कुछ अजीब है। क्योंकि वे अपने हिसाब से रहते हैं। क्योंकि वहाँ का एक फैशन है। जो सदियों से चला आ रहा है और पर्व त्यौहार की बात करें तो वहाँ भी इसी तरह का वर्णन है।

चौथे अध्याय के अन्तर्गत मैंने रामदेव धुरंधर के उपन्यासो में भारतीय संस्कृति एवं परिवेश बोध 'पूछो इस माटी से', 'पथरीला सोना', 'विराटगली के वाशिंदे', 'ढलते सूरज की रोशनी के संदर्भ में भारतीय संस्कृति तथा परिवेश का मूल्यांकन किया है। रामदेव धुरंधर के उपन्यासों में परिवेश निम्न सन्दर्भों को केन्द्र में रखकर निरूपित किया है। उनके सामाजिक परिवेश, सांस्कृतिक परिवेश, राजनीतिक परिवेश, धार्मिक परिवेश और आर्थिक परिवेश को समझ सकते हैं। फिर भी धुरंधर जी के उपन्यासों में प्रवेश 'चेहरों का आदमी' से माना जाता है। यह उपन्यास सामाजिक और राजनीतिक दृष्टि से ओत-पोत हैं। इसमें स्वार्थ और भ्रष्ट लोगों का वर्णन किया गया है। जो अपनी स्वार्थ सिद्धी के लिए न जाने कितने चेहरे को धारण किए हैं। और न जाने कितने नकाब बदलते रहते हैं। जेल से मुक्त होने के कारण राजशेखर ने इस उपन्यास की कथा को आगे बढ़ाया है। इसको महत्वपूर्ण पात्र माना गया है। जहाँ तक इसमें राजनीतिक का मुद्दा है। यहाँ रामफल राउस को जब नौकरी मिलती है। तब उस समय राजनीतिक दलों ने वोट लेने के लिए आश्वासन दिये। ठीक उसी प्रकार 'छोटी मछली बड़ी मछली' को सामाजिक दायरे में रहकर सिमट गया है। इस उपन्यास में

नायिका विनोद के आंतरिक संघर्षों की कथा है। उसी कड़ी में 'पूछो इस माटी से' यह एक ऐतिहासिक उपन्यास जो आर्थिक परिवेश से गुजर रहा है। अर्थात् ये मॉरीशस के पृष्ठभूमि पर लिखा गया है। तथा इन देशों में गिरमिटिया मजदूरों पर गोरे मालिक प अत्याचार करते थे। इस उपन्यास में सामाजिक और आर्थिक परिवेश का साक्षात प्रमाण है। उसका यथार्थ वर्णन करने का मैंने प्रयत्न किया है।

पंचम अध्याय के अन्तर्गत मैंने रामदेव धुरंधर के उपन्यासों की प्रमुख समस्यायों का निरूपण किया है। रामदेव धुरंधर के उपन्यासों में भारतीय संस्कृति व मॉरीशस की संस्कृति से कम नहीं है। यह भारतीय संस्कृति उन भारतीय मजदूरों का चित्रण किया है जिन्होंने विदेश में जाकर अपनी सभ्यता ,संस्कृति का पालन किया। इस अध्याय में मैंने विभिन्न समस्याओं का निरूपण किया है।

छठे अध्याय के अन्तर्गत मैंने रामदेव धुरंधर के उपन्यासों में चित्रित भावपक्ष एवं कलापक्ष का विवेचन किया है।

रामेदव धुरंधर के उपन्यासों में कला पक्ष व भाव पक्ष को अलग-अलग रूपों में निरूपित किया गया है। सबसे पहला कला पक्ष के अन्तर्गत उनके उपन्यासों में मॉरीशस के कई शब्द ऐसे है। जो भारतीय से बिल्कुल अलग हैं। क्योंकि वहीं पर ग्रामीण अंचल में शब्द वाचन का प्रयोग व गिरमिटियां मजदूरों शतं बंदी के रूप में कार्य करवाया जाता है। रामदेव धुरंधर कहते हैं कि शब्द में कहीं एक भाग व सौन्दर्य रूपी परिपाटी देखने को मिलती है। क्योंकि यह सौन्दर्य उन उपन्यासों से जुला हुआ है। जिसमें दोनों आपसी सम्बन्ध एक नए मानक के रूप में सौन्दर्य दिखाई पड़ता है। जैसे-छोटी मछली, बड़ी मछली को लेकर एक मानक सौन्दर्य जो जमीनी स्तर से नहीं बल्कि जल में रहने वाली मछली की सबसे बड़ी विशेषता सौन्दर्य व कला पक्ष के साथ 'पथरीला सोना' में ग्रामीण अंचल की बोल-चाल व रहन-सहन एवं संस्कृति को एक नए कला पक्ष के साथ जोड़े हैं। ठीक उसी प्रकार रामदेव धुरंधर जी के उपन्यासों में भाव पक्ष का तात्पर्य जन उपन्यासों से है। जो भाव केन्द्रित हो, भाव के साथ भाषा में सरलता का समायोजन करता हो ।

'बनते बिगडते रिश्ते' उपन्यास में रामदेव धुरंधर जी कहते हैं कि मैं हिंदी को लेकर विदेशों में उन संबंधों को भाव पक्ष में स्त्री पात्र व पुरुष पात्र के रिश्तों को बनते बिगड़ते रिश्ते दिखाई पड़ती है, क्योंकि भारत में जिन रिश्तों को तय किया जाता है। वैसे ही रिश्ता विदेशों में नहीं हैं और वहाँ की विदेशों रिश्ता एक बार बिगड़ गया तो समझिए की दूसरा रिश्ता तय है। रामदेव धुरंधर जी के उपन्यासों में हिंदी भाषा का प्रयोग मिलता है। इसके साथ ही साथ वे रस, छन्द, अलंकार शब्द शक्ति व मुहावरों का प्रयोग किया जाता है। जब वे बोलते है तो एक लय व ताल बनाकर लिखते हैं। त्रिलोचन जी कहते हैं कि-

'भाव उन्हीं का है

जो थे भाव में

अभाव से दबे रहे

जगे स्वभाव में '

यह पंक्ति 'पथरीला सोना' को भाव पक्ष का उद्बोधन करती है तथा 150 विश्वविद्यालयों में हिन्दी को केन्द्र में रखकर शिक्षण का कार्य कर रहे हैं। अर्थात् रामदेव पुरंधर जी का कला पक्ष व भाव पक्षा का होना एक सौन्दर्य की अनूभूति का साक्षात् प्रमाण है। इसमें कोई किसी भी प्रकार सन्देह नहीं है।

उपन्यासों की भाषाशैली -

प्रवासी हिंदी साहित्य में उपन्यासों की भाषा शैली हिंदी में होने के बावजूद अलग-अलग देशों में प्रवासी साहित्यकारों विदेशों में जाकर ब्रज और भोजपुरी के साथ के साथ मॉरीशस की भाषा में बोलते हैं।

उपन्यासों का भाव सौन्दर्य-

रामदेव घुरंधर के उपन्यासों में भाव सौन्दर्य उनके सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक तौर पर भाव सौन्दर्य मिलता है। इसलिए कुछ पाश्चात् विचारकों का मानना है। हर उपन्यास की अपनी भाव व कला होती है कि वे किस धारा में लिख रहे थे। सबसे बड़ी बात होती है। फिर भी हर उपन्यास की अपनी भाषा पर पूर्ण रूप से अधिकार होता है। क्योंकि कि उपन्यासों में भाव, लहजा और अभिप्राय इन तीनों का होना आवश्यक है तथा वे किस लय व ताल में पात्रों से बात करते हैं। ये उनकी परिपाटी होती है। उन्होंने उपन्यासों में राजनीतिक का मुद्दा जो अन्तर्द्वन्द्व की कथा का वर्णन मिलता है।

भारतीय भाषाओं का प्रभाव-

प्रवासी हिंदी साहित्य में भारतीय भाषाओं का अधिकार होता है। जहाँ पर हिंदी भाषी लोग हिंदी भाषा को जानते हैं और इससे कहीं और अधिक विदेशों में हिंदी भाषा का अभाव रहा है। कहीं-कहीं विदेशी भाषा का भी प्रयोग किया गया है।

इस शोध-प्रबंध में मैंने गुणात्मक अनुसंधान , विवरणात्मक अनुसंधान ,विश्लेषणात्मक अनुसंधान, आधार भूत अनुसंधान, ऐतिहासिक अनुसंधान इत्यादि शोध-प्रविधियों का प्रयोग किया है।

संदर्भ ग्रन्थ -

1 विश्व हिंदी संरचना .सं कमल किशोर गोयनका

2 अभिमन्यु अनत समग्र कविताएँ सं. कमल किशोर गोयनका

3.प्रवासी पुत्र डॉ.पदमेश गुप्त. वाणी प्रकाशन नयी दिल्ली

4 वर्किंग पार्टनर- उषा राजे सक्सेना .राधाकृष्ण प्रकाशन दिल्ली

5. प्रवासी भारतीयो की हिंदी सेवा . डॉ. कैलाश कुमारी सहाय, अविराम प्रकाशन दिल्ली

6.संस्कृति के चार अध्याय .रामधारी सिंह दिनकर- लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद

7. मॉरीशस में हिंदी की स्थिति डॉ. उदयनारायण गंगू

8.मॉरीशस में हिंदी साहित्य का इतिहास .श्री जयनारायण रॉय

9. अन्त अभिमन्यु 1993 .वसंत चयनिका मॉरीशस के महात्मा गांधी संस्थान

10. हिंदी की विश्व यात्रा प्रो. सुरेश ऋतु

11.पंचशील शोध समीक्षा .डॉ हेतु भारद्वाज

12. हिंदी के प्रवासी साहित्य की परंपरा डॉ. स्वर्णलता

13. मॉरीशसय हिंदी भाषा और साहित्य डॉ. सतीश बन्द्र अग्रवाल

14. लोकसंस्कृति की रूपरेखा .कृष्णदेव उपाध्याय

15. हम प्रवासी अभिमन्यु अनत .16 नारी क्या है. बिंदु सिन्हा

17. अमेरिका .अर्चना पंडा

18. मॉरीशस का हिंदी साहित्य का एक परिचय- डॉ. मुनीश्वर चितामणि

19. 21 वीं सदी का हिंदी साहित्य. डॉ ललिता राठोड

20. संस्कृति तो चार अध्याय. हजारीप्रसाद द्विवेदी

21. चलो फिर एक बार डॉ. अंजना सधीर

22- वतन .उषा देव

23. प्रवासियों में हिंदी दशा और दिशा .सुषम बेदी

24. मूल्य और हिंदी उपन्यास डॉ. हमराज कौशिक

25. प्रवासी लोट आयो .सावित्री शर्मा

26. विश्व भाषा हिंदी से. मोहिनी शर्मा केन्द्रीय संस्थान आगस

27. प्रवासी हिंदी साहित्य तथा साहित्यकार .की पी. पाटिल

28. शिवराम आक्टे, संस्कृत हिंदी कोश, दिल्ली मोती लाल बनारसीदास, 1965 संरकर

29. रामचन्द्र वर्मा (सम्पादक) लोक भारती प्रमाणिक हिंदी कोश भारती, तृतीय संस्करण 1996

30. श्यामसुन्दर दास (सम्पादक) विदेशी शब्द सागर (खण्ड-4) प्रयाग काशी नगरी प्रचारणीय सभा।

31. गोविन्द चातक बृद्ध हिंदी पर्यावाची शब्द कोश तक्षशीला प्रकाशन, नई दिल्ली

32. केहर शरीफ प्रवास चुनौतिया व संभारक परिवर्तन www ajitweekly com 27 2008

33. रामदेव धुरंधर कृत पथरीला सौना, वाणी प्रकाशन 2014

34. रामदेव धुरंधर कृत 'चेहरे का आदमी, पूर्वोदय प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रकाशन 1981

35. रामदेव धुरंधर कृत्त छोटी मछली बडी मछली, राजकमल प्रकाशन, प्रकाशन 1983, नई दिल्ली

36. रामदेव धुरंधर कृत 'पूछो इस माटी से, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली

37. रामदेव धुरंधर कृत 'बनते बिगड़ते रिश्ते, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, प्रकाशन 1990, नई दिल्ली

38. रामदेव धुरंधरकृत, विराट गली के बाशिंदे, आधारशिला प्रकाशन

39. रामदेव धुरंधरकृत, ढलते सूरज की रोशनी, सामाजिक प्रकाशन, प्रकाशनार्थ 27 मई. 2019. नई दिल्ली

पत्र-पत्रिकाएँ :-

1. 'वसंत त्रैमासिक, महात्मा गांधी संस्थान, मॉरीशस की पत्रिका

2. प्रवासी संसार त्रैमासिक मॉरीशस

3. 'विश्व विवेक' त्रैमासिक अमेरिका

4. 'अभिव्यक्ति' वेब पत्रिका

5. धर्मयुग भारत

विशाल भारत, प्रवासी अंक कलकत्ता

7. 'विश्व हिंदी पत्रिका', विश्व हिंदी सचिवालय 2010

8. विश्व की हिंदी पत्र-पत्रिकाएँ डॉ. कामता कमलेश

9. अकादमी की द्विमासिक पत्रिका समकालीन भारतीय साहित्य अकादमी

10. प्रवासी काव्य संचयन, आजकल (मासिक) जनवरी 2016 नई दिल्ली

महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा

पीएच.डी. (हिंदी) उपाधि हेतु प्रस्तुत संक्षिप्त रूपरेखा

(SYNOPSIS)

प्रवासी हिंदी साहित्यकार रामदेव धुरंधर के उपन्यासों में भारतीय संस्कृति एवं परिवेश बोध

शोधार्थी
अमित कुमार गुप्ता

निर्देशक
डॉ. कनुभाई निनामा
प्रोफेसर

हिंदी विभाग, कला संकाय
महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा (गुजरात)

2022

CamScanner

प्रवासी हिंदी साहित्यकार रामदेव धुरंधर के उपन्यासों में भारतीय संस्कृति एवं परिवेश बोध

भूमिका

''प्रवासी साहित्य हिंदी का साहित्य है जिसका रंग–रूप, उसकी चेतना और संवेदना भारत के हिंदी पाठकों के लिए नई वस्तु है, एक नये भाव–बोध का साहित्य है एक नयी व्याकुलता और बेचैनी का साहित्य है जो हिंदी साहित्य को अपनी मौलिकता एवं नये साहित्य संसार से समृद्ध करता है। इस प्रवासी साहित्य की बुनियाद भारत–प्रेम तथा स्वदेश–परदेश के द्वंद्व पर टिकी है।''–**कमल किशोर गोयनका**

हिंदी साहित्य को विश्वव्यापी बनाने के लिए साहित्यप्रेमी अनेक देशों में रहकर भी अपने गुणवत्तापूर्ण साहित्य से हमें अवगत कराते हैं। ऐसे साहित्यकार हमारे देश में प्रवासी कहलाते हैं। इसके अलावा भारत से इतर देशों में रह रहे भारतवंशी हिंदी को विश्व के कोने–कोने तक पहुँचाकर हिंदी भाषा के विस्तार के साथ–साथ हिंदी का विकास भी कर रहे हैं। प्रवासी साहित्य में रचनात्मक साहित्य अधिक लिखा गया है।

अपेक्षाकृत आलोचनात्मक साहित्य के। कमलेश्वर ने प्रवासी साहित्य पर टिप्पणी करते हुए कहा था कि– **"रचना अपने मानदंड खुद तय करती है, इसलिए उसके मानदंड बनाये नहीं जाएंगे। उन रचनाओं के मानदंड तय होंगे।''** प्रवासी लोगों की तीन श्रेणियाँ बनायी जा सकती हैं। एक श्रेणी में वे लोग हैं, जो गिरमिटिया मजदूरों के रूप में फीजी, मॉरीशस, त्रिनिडाड, गुयाना, दक्षिण अफ्रीका आदि देशों में भेजे गये थे। दूसरी श्रेणी में 80 के दशक में खाड़ी देशों गये अशिक्षित–अद्धशिक्षित कुशल अथवा अद्धकुशल मजदूर

CamScanner

आते हैं। तीसरी श्रेणी में 80–90 के दशक में गए सुशिक्षित मध्यवर्गीय लोग हैं। तीनों श्रेणी के प्रवासी अपने–अपने कर्तव्य से विमुख नहीं हुए हैं, वे हिंदी साहित्य की सेवा में तल्लीन हैं।

विदेशों में रहने वाले हिंदी साहित्यकारों के योगदान के कारण आज हिंदी साहित्य अपनी पूर्णता की एक कड़ी को अपने में समाहित कर अपने फलक का विस्तार कर रहा है। आज प्रवासी रचनाकारों की रचनाएँ इस कारण महत्वूपर्ण हैं, क्योंकि उनकी रचनाओं में भिन्न–भिन्न देशों की परिवेशगत परिस्थितियों का उल्लेख मिलता है। लेखक जिस परिवेश, प्रकृति और समाज के बीच रहकर बड़ा हुआ है, उनकी लेखनी में उस परिवेश का प्रतिबिंब तो अवश्य आएगा। हिंदी साहित्य के अनेक । रचनाकारों का संबंध गाँवों से रहा है। उनके साहित्य में गाँवों की सुगंध मिलती है। लेखक अपने परिवेश और समाज में जीकर प्रवासी उसे ही अपनी संवेदनाओं, भावनाओं अस्तित्व का आधार बनाता है। इस पर भी लेखक गाँव से शहर, शहर से गाँव, भारत से अमेरिका आदि कहीं की भी संवेदनाओं, कथाओं, पात्रों और समस्याओं को अपने साहित्य में स्थान दे सकता है। निश्चय ही संवेदनाओं और भावनाओं की कोई सीमा नहीं, उनकी कोई परिधि नहीं, उन पर कोई बंधन नहीं।

यदि सूक्ष्मता से देखा जाये तो वस्तु ही अभिव्यक्ति के स्वरूप को तय करती है। वस्तु अर्थात् संवेदना के स्वरूप को, मर्म को जाने बिना उसकी अभिव्यक्ति को सही या गलत ठहराना अनुचित हो सकता है।

जब भी हिंदी के प्रवासी साहित्य का मूल्यांकन होगा, उसे संवेदना, अस्तित्व, भावना की कसौटी से गुजरना होगा।

भारतीय मूल के लोग समस्त विश्व में फैले हुए हैं उन्होंने विदेशों को अपनी कर्मभूमि बनाया है यह बात नवीन नहीं है। प्रवासी साहित्य भी नवीन नहीं है, परन्तु बीसवीं शती में प्रवासी भारतीयों ने भारतीयता की अस्मिता को जिंदा रखने की भरसक कोशिश की है। प्रवासी हिंदी साहित्य जो पहले उपलब्ध था उससे आज का प्रवासी साहित्य एकदम अलग है। इन पैंतीस–चालीस वर्षों में नवीन **विद्युत्यिकी** के तकनीक विकसित हुए। प्रौद्योगिकी चरम सीमा लांघती गयी तो यह साहित्य भी अधिकाधिक जनप्रिय होता गया। जन–जन तक पहुँचता गया। प्रवासी भारतीय मूल के विदेशों में रहने वालों के सृजनात्मक अस्तित्वबोध लेखन को प्रवासी साहित्य कहा जाता है और जिन्होंने 'हिंदी' को केंद्र में

CamScanner

रखकर या माध्यम बनाकर या हिंदी में लिखा है वे प्रवासी हिंदी साहित्यकार हैं तथा यह बहुत समृद्ध श्प्रवासी साहित्यश है।

'प्रवासी' शब्द से तात्पर्य है– विदेश वास या अपने देश को छोड़कर दूसरे देश में निवास करना। प्रवास शब्द उन लोगों के लिए प्रयुक्त हुआ है, जो विदेशी एजेंटों द्वारा गिरमिटिया के रूप मे बहला–फुसलाकार सुखद भविष्य का सपना दिखाकर दूर देशों में ले जाये गये थे या वे जो बीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में विकसित देशों में शिक्षा और रोजगार हेतु गये और वहीं बस गये।

'प्रवासी' शब्द मात्र सुनकर ही प्रवासी साहित्य के प्रति मन में जिज्ञासा उत्पन्न हो जाती है कि उनके साहित्य में भारतीयों की जीवन–शैली और उस देश के परिवेश की अभिव्यक्ति किस रूप में हुई है। इस विषय में **डॉ. कमल किशोर गोयनका कहते हैं– ''हिंदी पाठक यह समझकर प्रवासी साहित्य को पढ़ता है कि वह अनजान देश में रहने वाले अपने भारतीयों के जीवन के साथ उस देश के जीवन और समाज को भी जानना चाहता है, क्योंकि जिस भी देश में प्रवासी भारतीय रहेगा उस देश का परिवेश जीवन प्रणाली संघर्ष, सरोकार आदि सभी उसके जीवन तथा सोच सबको प्रभावित करेंगे, प्रकृति हो या मानवीय समाज, संस्कृति हो या भाषा साहित्य, जब इनके भिन्न–भिन्न मानव समूहों समाजों और सांस्कृतिक, साहित्यिक प्रदायों और अवधारणाओं के सम्मिलन ने एक नये मानवीय समाज की सृष्टि को संभव बना दिया है।''**

19वीं सदी में जो भारतीय विदेश गये उनमें अधिकतर हिंदीभाषी क्षेत्र से ही गये थे। अपनी भूमि को छोड़कर विदेश गया व्यक्ति पीढ़ी–दर–पीढ़ी प्रवासी ही रहता है। प्रवासी अपने का सामान्य से अलग अनुभव करता है। वह अपनी भाषा और अपनी संस्कृति को पकड़े रहना चाहता है पर उसकी विवशता है, नये देश को अपनाने की उसे अपना बनाने की। क्योंकि उसको उसी देश में रहना है। यह दुविधा और विवशता ही प्रवासी भारतीयों के साहित्य अभिव्यक्ति की मूल संवेदना के रूप में उभरकर आती है। फीजी के राष्ट्रपति पं. कमलाप्रसाद मिश्र की कविता **'क्या मैं परदेशी हूँ?'** में यह संवेदना व्यक्त हुई है।

''धवल सिंधु तट पर में बैठा अपना मानस बहलाता
फीजी में पैदा होकर भी मैं, परदेशी कहलाता

यह है गोरी नीति, मुझे सब भारतीय अब भी कहते
यद्यपि तन मन, धन से मेरा फीजी से ही है नाता
भारत के जीवन से फीजी के जीवन में अंतर है
भारत कितनी दूर वहाँ पर कौन सदा जाता आता
औपनिवेशिक नीति गरल है, नहीं हमें जीने देती
वे उससे ही खुश रहते हैं, जो उनका यश है गाता
भारतीय वंशज पग–पग पर पाता है केवल संकट
जंगल को मंगल करके भी दो क्षण चौन नहीं पाता
साहस है हम सब सह लेंगे हम भयभीत नहीं होंगे
पता नहीं कब गति बदलेगा कालचक्र जग का त्राता।''

प्रवासी भारतीय हिंदी साहित्य इतिहास प्रायः का डेढ़ सौ वर्षों का है, और यह साहित्य मूल रूप से भारतीयों के विदेश आगमन, उनके संघर्ष और विकास की गाथा कहा जा सकता है। प्रवासी हिंदी साहित्य की मूल संवेदना प्रवास की पीड़ा है जो प्रवासी हिंदी साहित्य में मुख्य रूप से व्यक्त हुई है। प्रवास में जहाँ एक ओर व्यक्ति के मन में नई जगह जाने का उत्साह होता है, नई आशाएँ, आकाँक्षाएँ हैं, वहीं दूसरी ओर अपनों से बिछुड़ने की पीड़ा है, अपनी धरती का विछोह और विस्थापन का कष्ट होता है। यदि नया वातावरण व्यक्ति के अनुकूल सुख–सुविधा संपन्न हुआ तो यह विछोह की पीड़ा को धीरे–धीरे भुलाकर उसी बातावरण में ढलने लगता है, और यदि प्रवास व्यक्ति की आशा के अनुरूप नहीं होता है तो वही प्रवास व्यक्ति के लिए कष्टकारी लगने लगता है। इन प्रवासी भारतीयों को दूर देशों में आर्थिक संकटों के साथ साथ अपनी धरती, अपने घर–परिवार से दूरी, अमानवीय शारीरिक यातनाओं और लोगों के बेगानेपन को झेलना पड़ा है। प्रवासी साहित्यकारों ने अपने साहित्य में इन्हीं संवेदनाओं को सहेजने का प्रयास किया है। मॉरीशस के अभिमन्यु अनत के साहित्य में समाज और परिवेश का घोर संत्रास जीवंत रूप में दिखाई पड़ता है, वह स्वयं उनका देखा और भोगा हुआ है। अभिमन्यु अनत कहते हैं–**''मेरी रचनाएँ केवल मेरी अपनी भावनाओं की कोई पिटारी नहीं रही हैं। उसमें मेरा वह पूरा माहौल भी हैं जिसमें मैंने कई रातें बिना खाये बितायी हैं। बेकारी की यातना को भोगा**

CamScanner

है और व्यवस्था की अव्यवस्था में उन सारे दारूण दंडों को भोगते हुए लोगों की यातानाओं को महसूसा है और मानसिक स्तर पर झेला भी है।''

इसी दु:ख–दर्द को व्यक्त करती हुई सूरीनाम के साहित्यकार अमरसिंह रमण की 'आप्रवासी यादगार' कविता की पंक्तियाँ हैं–

''वही दिनवा जब याद आवेला अँखियों में भरेला पानी रे।

हिंदुस्तान से भागकर आइली यही है अपनी कहानी रे,

भाई छूटा, बाप छूटा और छूटी महतारी रे।

अरकटिया खूब भरमवलीस कहैं पैसा कमैबू भर–भर थाली रे

वहीं चक्कड़ मा पड़ गइली, बचवा याद आय गइल नानी रे।''

यह साहित्य प्रवासी भारतीयों के भोगे हुए यथार्थ, मानसिक संताप, और पीड़ा को दर्शाता है। अंग्रेज जब भारत के असहाय और निम्न मजदूरों को झाँसा देकर विदेशों में ले गये थे, तो उन्हें यह बताया गया था कि मॉरीशस में पत्थर उलटने से सोना ही सोना मिलता है इन शर्तबंध मजदूरों ने अपनी मेहनत से वहाँ के बंजर भूमि को उपजाऊ बनाया। पथरीली जमीन को काट–काटकर समतल किया। गिरमिटिया मजदूरों का काम था मेहनत करना, पसीना बहाना और स्वामीभक्त बने रहना।

कड़कती धूप में मालिक के कोड़े खाकर, बाँसों का प्रहार और सरदारों की गालियाँ सुनकर भी उन्हें चुप रहना पड़ता था। बीमार होने पर बिना देखभाल और दवा–दारू के कई मजदूर बेमौत मर जाते, उन्हें अपने देश की मिट्टी तक भी नसीब नहीं होती। जो जीवित रहे वे अपमान और अत्याचार सहकर भी अपने देश नहीं लौट पाये। क्योंकि उनका अनुबंध पाँच वर्ष का था। उन्हें मजबूरन पथरीली जमीन को चीर–चीरकर पत्थरों को बाहर निकालने में उस अवधि को बिताना पड़ा। अभिमन्यु अनत की कविता **'अधगले पंजरों पर'** में इसका चित्रण स्पष्ट है–

''भूकम्प के बाद ही

घरती के फटने पर

जब दफनायी हुई सारी चीजें

CS CamScanner

ऊपर को आयेंगी

जब इतिहास के ऊपर से

मिट्टी की परतें घुल जायेंगी

मॉरीशस के उन प्रथम

मजदूरों के

अधगले पंजरों पर के चाबुक और बाँसों के निशान

ऊपर आ जायेंगे।''

वर्तमान में जो भारतीय प्रवासी हिंदी साहित्य विदेशों में रहने वाले हिंदी लेखकों द्वारा अभिव्यक्त हो रहा है, वह न केवल वहाँ के भारतीय समुदाय की जीवन शैली को प्रतिम्बिति करता है, बल्कि वहाँ के मूल निवासियों की जीवन शैली, संघर्षों और सुख–दुःख आदि को भी अभिव्यंजित करता है। अमेरिकी हिंदी लेखिका सुषम बेदी ने अपने कहानी संग्रह ''चिड़िया और चील'' तथा उपन्यास 'हवन', 'लौटना', 'गाथा अमरबेल की', 'नवाभूम की रसकथा' आदि में भारतीय मूल्यों और पाश्चात्य संस्कृति के अंतर्विरोधों को उद्घाटित किया है। प्रवासी भारतीय चाहे विदेशों में बसे हों किंतु उनका मन, आत्मा देश की मिट्टी में ही निवास करती है। पराये देश की संस्कृति और समाज के बीच रहकर भी अपनी भाषा, संस्कृति और अपने जीवन मूल्यों के प्रति लगाव आदि संवेदना को देखा जा सकता है। रामलाल के 'भजन' की इन पंक्तियों में यह भाव विशेष रूप से मुखरित हुआ है–

''अरे जतन कर ले मनवा

मनुज तन पाई कै

कलकत्ता छोड़ा, मदरास छोड़ा

हमार मुलुक अपनाई के

कुली नाम धराइ के

घर छोड़ा, रिश्ता मोड़ा बाहर आने कमाई के

गोरन के हंटर लात खाए

दुख सहे नया देश बनाई कै

धर्म न छोड़ा भाषा न छोड़ी

संस्कृति रखी बचाई कै।''

इस प्रकार निश्चित ही प्रवासी हिंदी साहित्य में प्रवासी भारतीयों तथा वहाँ के मूल निवासियों की मानवीय संवेदना को देखा जा सकता है। प्रवासी भारतीयों के संबंध में यह मानवीय संवेदना परायेपन की अनुभूति, मनःस्थिति से संघर्ष और नई पहचान के रूप में दृष्टिगोचर होती है। यह साहित्य प्रवासी भारतीयों तथा भारत के नागरिकों के बीच सम्पर्क स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। प्रवासी हिंदी साहित्य की वर्तमान संवेदना उनकी मातृभूमि से उत्पन्न होने वाले प्रेम के रूप में भी देखा जा सकता है, साथ ही साथ इस वैश्वीकरण के दौर में प्रवासी हिंदी साहित्य में संवेदना का स्वरूप ''वसुधैव कुटुंबकम्'' की अवधारणा को स्थापित करने तथा विश्व को सांस्कृतिक रूप से भारतीयकृत करने के उद्देश्य में भी स्पष्ट होता है। इस तथ्य की पुष्टि इस बात से होती है कि प्रवासी हिंदी साहित्य संवेदना का स्वरूप न केवल भारतीयों की मनःस्थिति को अभिव्यक्त करने के रूप में स्थापित हो रहा है बल्कि यह विदेशियों की भी मनः स्थिति जो कि प्रवासी भारतीयों की मनःस्थिति से मिलती–जुलती है, उसकी भी अभिव्यक्ति कर रहा है। अतः स्पष्ट है कि वर्तमान प्रवासी हिंदी साहित्य की संवेदना अपने तक ही सीमित न होकर सम्पूर्ण मानवीय समाज की संवेदना को अपने में समेटे हुए हैं।

साहित्य के अन्तर्गत प्रवासी साहित्य का अपना एक रूप है , अपनी एक संरचना है। जब प्रवासी साहित्य की बात की जाती है तब सर्वप्रथम यह प्रश्न हमारे सामने आता है कि प्रस्तुत साहित्य में भारतीय साहित्य के समान संवेदना और सुदृढ़ता होगी ? किन्तु वर्तमान समय में ऐसा नहीं है। भारतीय परिवेश के जीवंत अनुभवों का अंकन वर्तमान युग में प्रवासी साहित्य में जीवंत हो उठा है। हम यदि सूक्ष्म निरीक्षण करें तो पिछले एक–डेढ़ दशक के अंदर प्रवासी साहित्य में एक तीव्रता और गजब की रचनात्मकता आज हमारे सामने दिखाई देती है। प्रवासी साहित्यकारों ने अपने साहित्य द्वारा जहाँ हिंदी साहित्य का विकास किया है, वहाँ उन्होंने अपनी भारतीय संस्कृति से जुड़ाव को भी महत्व दिया है । प्रवासी साहित्यकार चाहे अपने देश के दूर है किन्तु उसके लेखन कार्य में उस देश से गहरा और आत्मीय जुड़ाव देखने को मिलता है , ये प्रवासी साहित्यकार भले ही देश–दुनिया के अलग–अलग क्षेत्रों में रहते हों फिर भी इनकी लेखनी में अपने देश के लिए सम्मान की भावना है , अपने देश की गंध है, अपने देश से जुड़ाव रखने की उत्कट झंखना है। प्रवासी

CamScanner

साहित्य में जहाँ साहित्य के सभी सरोकार निहित है , वही उस साहित्य की प्रेरणा भूमि विद्यमान है। आज का प्रवासी साहित्य अपनी भाषा, अपनी संस्कृति ,अपनी जन्मभूमि तथा अपने लोगों से जुड़ा साहित्य है। इस साहित्य के सभी रूप हमें प्रवासी साहित्यकारों की रचनाओं में उपलब्ध होता है।

साहित्य मानवीय संवेदना की अभिव्यक्ति का सशक्त और कलात्मक माध्यम है। अनुभूति जितनी सघन और व्यापक होगी, अभिव्यक्ति उतनी ही जीवंत होगी। मानवीय अनुभूति को उसके परिवेश, परिस्थितियों और घटनाओं से पृथक नहीं किया जा सकता। अतः साहित्य को समाज का दर्पण कहा जाता है। प्रत्येक देश की संस्कृति और समाज की अपनी एक प्रकृति और विशिष्टता होती है। उस संस्कृति और समाज में वास करने वाले देशवासी संवेदनात्मक रूप से अपने देश से जुड़े रहते हैं। किंतु 'विश्व ग्राम' की अवधारणा के इस युग में एक देश तक सीमित रहना संभव नहीं है। अच्छी शिक्षा, रोजगार, सुविधा और आकर्षक जीवन–शैली की आकांक्षा में मनुष्य एक देश से दूसरे में प्रवास करता है।

प्रवासी के मन में अपने मूल देश के संस्कार, इतिहास और जीवन मूल्यों की धरोहर की एक सामूहिक स्मृति अंकित रहती है। अपने नैतिक मूल्यों, परंपराओं और आदर्शों को त्यागकर पराए देश की नैतिकता, परिवेश कार्य–व्यवहार और भाषा के साथ ताल–मेल न बैठा पाने की पीड़ा प्रवासी के मन को उद्वेलित करती है। यही पीड़ा प्रवासी साहित्य के मूल में निहित है। प्रवासी हिंदी साहित्य पर प्रकाश डालती हुई के **अनिल प्रभा कुमार कहती हैं–''प्रवासी साहित्य की एक भाषा वह है, जिसमें केवल भूगोल बदल गया है। वहाँ भारत की धरती नहीं है... वह अमेरीका हो सकता है, इंग्लैण्ड या यूरोप का कोई अन्य देश हो। सकता है, किंतु वह समाज भारतीय ही है।''** प्रवासी साहित्य पहचान, विस्थापन की पीड़ा, नये–पुराने मूल्यों के द्वंद्व, दृष्टिकोण को टकराव, तनाव, अकेलेपन और निरर्थकता बोध आदि मानवीय अनुभवों की कहानी है। आज प्रवासी हिंदी साहित्य विश्व साहित्य में अपनी अलग पहचान बना चुका है। हिंदी के प्रवासी साहित्य का फलक बहुत विस्तृत है। इसमें बुरा– प्रवासी देशों एवं नव–प्रवासी देशों दोनों का साहित्य समाहित है । पूरा प्रवास के देशों को जाने वाले गिरमिटिया अपने साथ आल्हा, रामचरित मानस, महाभारत और दूसरे सांस्कृतिक ग्रन्थों को अपनी अस्मिता की रक्षा हेतु अपने साथ ले गये थे। सारे प्रवासी देशों के कथा साहित्य में देश , धर्म, संस्कृति और विस्थापन के साथ–साथ गुलामी के दृश्य भी दिखाई देते है।

CamScanner

नये प्रवासी देशों में अमेरिका ,ब्रिटेन , कनाडा, जापान , रूस, फिजी, त्रिनिदाद, टोबेगो, सूरीनाम , मॉरीशस इत्यादि कई स्थानों में शिक्षा और रोजगार के लिए जानेवाले प्रवासी, जो विदेश गये थे अपने देश की संस्कृति, विश्वास तथा भाषा के प्रति समर्पित रहे और प्रवासी भारतीयों ने अपनी मातृभाषा में अपनी अनुभूति को स्वर दिया।

सभी प्रवासी देशों में मॉरीशस का नाम प्रमुखता से लिया जाता है। प्रवासी हिंदी साहित्य में सबसे अधिक लेखन कार्य मॉरीशस में हुआ है। वैसे तो मॉरीशस में भारतीयों का प्रवास गिरमिटिया मजदूरों के रूप में हुआ है । अतः यहाँ भारतीयों ने शोषण से संघर्ष की लम्बी यात्रा तय की है।

मुझे प्रवासी साहित्य पर पहले से रुचि थी, उसमें भी विशेष मॉरीशस के साहित्य पर ,मैंने मॉरीशस के साहित्यकार रामदेव धुरंधर का चुनाव किया। मॉरीशस में हिंदी साहित्य का विस्तृत भंडार है । मुख्य लेखकों में **सोमदत्त बुखारी, ब्रजेन्द्र कुमार भगत 'मधुकर' बासुदेव विष्णु दयाल , अभिमन्यु अनत, रामदेव धुरंधर इत्यादि।** मैंने मेरे शोध–प्रबंध की भूमिका में प्रवासी साहित्य का अर्थ, प्रवासी साहित्यकार, संस्कृति आदि का विश्लेषण करने का प्रयास किया है। मेरे शोध–प्रबंध का विषय **'प्रवासी हिंदी साहित्यकार रामदेव धुरंधर के उपन्यासों में भारतीय संस्कृति एवं परिवेश बोध'** है, जिनको मैंने निम्नलिखित अध्यायों में बाँटा है–

प्रथम अध्याय– प्रवासी हिंदी साहित्य, प्रवासी हिंदी साहित्य की अवधारणा, नामकरण स्वरूप एवं विकास प्रवासी साहित्यकारों का सामान्य परिचय, प्रवासी साहित्य का मूल उद्देश्य, मॉरीशस के साहित्यकारों का परिचय एवं योगदान।

द्वितीय अध्याय– रामदेव धुरंधर का व्यक्तित्व एवं कृतित्व रामदेव धुरंधर का जन्म, शिक्षा और सम्मान रामदेव धुरंधर की प्रमुख रचनाओं का सामान्य परिचय, रामदेव धुरंधर के उपन्यासों के नाम।

तृतीय अध्याय– रामदेव धुरंधर के उपन्यासों में भारतीय संस्कृति एवं परिवेश बोध **छोटी मछली बड़ी मछली** (रहन–सहन, पोशाक, धार्मिक त्यौहार, बाल पर्व, विवाह लोकगीतों में संस्कृति, लोक कथाओं में संस्कृति) **चेहरों का आदमी**– (रहन–सहन, पोशाक, धार्मिक त्यौहार, बाल पर्व, विवाह , लोकगीतों में संस्कृति, लोक कथाओं में संस्कृ ति) **बनते बिगड़ते रिश्ते**– (रहन–सहन, पोशाक, धार्मिक त्यौहार, बाल पर्व, विवाह लोकगीतों में संस्कृति, लोक कथाओं में संस्कृति)

CamScanner

चौथा अध्याय– रामदेव धुरंधर के उपन्यासों में भारतीय एवं परिवेश बोध पूछो इस माटी से– (रहन–सहन, पोशाक, धार्मिक त्यौहार पर्व विवाह लोकगीतों में संस्कृति, लोक कथाओं में संस्कृति) पथरीला सोना – (बृहत छः खण्डों) (रहन–सहन, पोशाक, धार्मिक त्यौहार बाल पर्व, विवाह, लोकगीतों में संस्कृति लोक कथाओ में संस्कृति) , विट के वाशिंदे, ढलते सूरज की रोशनी।

पाँचवा अध्याय– रामदेव धुरंधर के उपन्यासों की समस्याएँ –

– भारतीय मजदूरों के उत्पीडन की समस्या, बतन से दूर होने की पीड़ा

–गिरमिटिया मजदूरों का जीवन एवं उसकी पीड़ाएं,

– सामाजिक समस्याएँ

– स्त्रियों की समस्याएं

– वृद्धों की समस्याएँ

– बच्चों की समस्याएँ

– रोजगार की समस्याएँ

– राजनीतिक समस्याएं

छठवाँ अध्याय– रामदेव धुरंधर के उपन्यासों में कला पक्ष एवं भाव पक्ष

–उपन्यासों की भाषा शैली,

–उपन्यासों में भाव सौन्दर्य,

– भारतीय भाषाओं का प्रभाव,

–विदेशी भाषाओं का प्रभाव,

–शब्द संरचना

परिशिष्ट–

1. साक्षात्कार
2. संदर्भ ग्रंथ सूची

CamScanner

उपसंहार–प्रथम अध्याय में मैंने निम्नलिखित मुद्दों को लेकर समीक्षा करने का प्रयत्न किया। प्रवासी हिंदी साहित्य के अन्तर्गत प्रवासी हिंदी साहित्य की अवधारणा को मैंने स्पष्ट किया।

प्रवासी हिंदी साहित्य की अवधारणा– प्रवासी हिंदी साहित्य की अवधारणा स्पष्ट करने से पहले एक प्रश्न उत्पन्न होता रहता है कि यह प्रवास है क्या ? प्रवास कहाँ से पैदा हुआ ? आखिर में इस प्रवास तथा प्रवासी साहित्य का क्या महत्व रहता है । इस पर मैंने अपने विचार रखा है। किन्तु हमें सर्वप्रथम प्रवास और प्रवासी को समझना अति आवश्यक है। प्रवास का संधि विच्छेद प्रवासी से मिलकर बना है। 'प्र' का अर्थ **उत्कृष्ट रीति** और **'वासी' का अर्थ** 'निवासी' होता है। अर्थात 'प्रवासी' हिंदी साहित्य में प्रवासी का मूल उत्कृष्ट रूप से निवास करने वाला साधारण व्यक्ति होता है। जो अन्यत्र भारत भूमि को छोड़कर किसी अन्य विदेशों में रहकर जीवनयापन करते हैं। जिसे प्रवासी साहित्य कहा जाता है। प्रवासी हिंदी साहित्य एवं रचनात्मक विमर्श है। जितना की कमलेश्वर के साहित्य पर।

परिभाषा

संस्कृत कोश के अनुसार– ''विदेश में गमन, विदेश यात्रा घर पर न रहना, परदेश निवास''[(1)]

लोक भारतीय प्रमाणिक हिंदी कोश के अनुसार– ''अपना देश छोड़कर, दूसरे देशों में बसना, यात्रा''[(2)]

हिंदी शब्द सागर में प्रवास का अर्थ– ''अपना घर या देश छोड़कर किसी दूसरे देश में रहना, विदेश में रहना, परदेश का निवास, विदेश है।''[(3)]

वृद्ध हिंदी पर्यावाची शब्द कोष में प्रवास का अर्थ–''परदेश वास निवास निर्वासन''[(4)]

संस्कृत कोश के अनुसार– प्रवासी किंवा, प्रवासिन का अर्थ (प्र + वस+ णनि) अर्थात् विदेशों में रहने वाला साहित्यकार''[(5)]

केहरा शरीफ के अनुसार–''आम तौर पर मनुष्य का एक स्थान को छोड़कर किसी दूसरे स्थान पर रहने लगा वही प्रवासी है। प्रवास जहाँ भी होता है। अनचाही खुशी के साथ भी होता है। जबरन ही इसका इतिहास बहुत लम्बा है। आदगी के जन्म के भौतिक

CamScanner

जरूरतों के लिए मानव जय पहली बार एक स्थान से कहीं और अच्छे साधन भरपूर स्थान की तलाश में चला तो प्रवास की शुरुवात हुई।''[6]

पंजाबी साहित्यकार व समाजशास्त्री परमजीत सिंह जज के अनुसार–''प्रवास एक ऐसा प्रक्रिया है। जिसमें एक व्यक्ति या समूह अपना जन्म स्थान पर बस जाता है।''[7]

उपरोक्त परिभाषाओं से स्पष्ट होता है कि प्रवासी हिंदी साहित्य के अन्तर्गत प्रवास व प्रवासी की परिभाषा हिंदी साहित्य से जुड़ा हुआ है।

नामकरण स्वरूप एवं विकास

प्रवासी हिंदी साहित्य में प्रवासी का नामकरण बहुत पहले से नामकरण किया जाता है। इसका अनुमान बीते वर्षों पर लगा सकते हैं। इसी नामकरण को लेकर प्रवासी हिंदी साहित्य को 2003 से मनाया जा रहा है। अभी हाल ही में भारत सरकार के अनुसार प्रवासी दिवस हर वर्ष के प्रथम माह 9 जनवरी को मनाया जाएगा। फिर भी हम इन नामकरण को लेकर हिंदी लेखन के कार्य को विदेशों तक विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में हिंदी में काम किया जा रहा है। इसमें कोई सन्देह नहीं है। प्रवासी रचनाकारों ने आज भी विदेश में जाकर बस गए हैं और हिंदी में कामकाज किया जा रहा है।

स्वरूप

प्रवासी हिंदी साहित्य के अन्तर्गत प्रवासी का स्वरूप अनुशीलन व विवेचन के परिणामस्वरूप हिंदी साहित्य में प्रवासी हिंदी साहित्य नए–नए पैमाने पर उद्‌घाटित किया जाता हैं। इन सभी बिन्दुओं के अन्तर्गत कर सकते हैं, जो इस प्रकार हैं

1. वे भारतीय नागरिक जो अध्ययन और अध्यापन के लिए विदेश में गए और वहाँ रहकर प्रत्येक हिंदी के कार्य को लेकर साहित्य की सर्जना की है। उनके द्वार रचित साहित्य को प्रवासी हिंदी साहित्य कहा जाता है।

2 .वे भारतीय जो अपने देश से बाहर रहकर रोजगार व उच्च्य शिक्षा व जीवन स्तर की प्राप्ति व स्वेच्छा से विदेश गए और वहीं रहकर हिंदी साहित्य के अन्तर्गत लेखन का कार्य किया।

3 .वे ऐसे व्यक्ति जो अपनी मातृभूमि में ही अपने प्रदेश व जनपद के अन्तर्गत भाषा व बोली क्षेत्र की परिपाटी को अलग करके जब किसी दूसरे प्रान्त, जनपद भाषा व बोली के क्षेत्र में प्रवास करने के बाद प्रवासी हिंदी साहित्य का प्रणयन करने लगे।

CamScanner

4. ये प्रवासी भारतीय जो दूतवासों में रहकर हिंदी साहित्य की सेवा करने के लिए विभिन्न साहित्यकारों की प्रवासी साहित्य के अन्तर्गत समायोजन किया जा रहा है। अर्थात् उदाहरण के तौर पर देखा जाय तो प्रवासी हिंदी साहित्य का स्वरूप एक नए पैमाने के साथ ही अध्ययन, अध्यापन, पर्यटन, रोजगार आदि का समावेश करते हैं।

विकास

प्रवासी हिंदी साहित्य का विकास 20वीं शताब्दी के पाँचवें दशक के अन्तिम वर्षों में जब भारत को आजादी प्राप्त हुई थी। तब उस समय प्रवासी हिंदी साहित्य का नामो निशान नहीं था उस दौर में प्रवासी साहित्यकारों को कोई जानता नहीं था। इसलिए एक दो दशकों से कई ऐसे समीक्षक, आलोचक व विद्वानों ने संस्थाओं में प्रवासी पर काम करने लगे। इसलिए अधिकांश कवियों ने हिंदी साहित्य में प्रवासी का स्थान दिया और केवल यहाँ तक ही नहीं, बल्कि विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में प्रवासी का नाम आने लगा। तथा गगनांचल एक ऐसी पत्रिका है। जो मार्च अप्रैल 2010 के अंक में प्रवासी साहित्य का जिक्र व अवलोकन होने लगा। इसलिए प्रवासी साहित्य को **नव विमर्श** एवं **प्रवासी विमर्श** के नाम से जाना जाता है और आज प्रवासी हिंदी साहित्य का विकास भारत से लेकर विदेशों में विजय की पताका बज रही है। हम समझते हैं कि विदेशों में 150 विश्वविद्यालयों में हिंदी लेखन का कार्य व पठन–पाठन का कार्य की जा रही हैं। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि प्रवासी हिंदी साहित्य का विकास कई विदेशों में हुआ है। जो निम्नांकित हैं –

1. अमेरिका में प्रवासी साहित्य
2. मॉरीशस का प्रवासी साहित्य
3. इंग्लैण्ड का प्रवासी साहित्य
4. सूरिनाम व प्रवासी साहित्य

1. अमेरिका में प्रवासी साहित्य–अमेरिका में प्रवासी हिंदी साहित्य की बोल–बाला हर जगह है। जिसमें मैं कुछ देशों का नाम बताना चाहता हूँ कि विशेष रूप से हिंदी में कार्य करने के लिए विभिन्न पत्र एवं पत्रिकाओं में काम की जा रही है। इसमें कोई सन्देह न होते हुए भी अमेरिका, इंग्लैंड, मॉरीशस, नावें, फीजी, सूरिनाम आदि देशों में हिंदी लेखन का कार्य किया जा रहा है। अमेरिका में प्रकाशित पत्रिका जो कि बहुत ही प्रसिद्ध व सुविख्यात है। इस पत्रिका का नाम श्विश्व विवेक वास्तव में यह एक ऐसी पत्रिका है कि हिंदी की वैश्विक रूप को रचनात्मक चित्र को प्रस्तुत करती है। इस पत्रिका का उद्देश्य यह

CamScanner

है कि भारतीय संस्कृति व को केन्द्र में रखकर 'विश्व विवेक' नामक पत्रिका में महत्वपूर्ण योगदान मिला है। इस पत्रिका में रामेश्वर अशान्त (स्व०) डॉ. वेद प्रकाश बटुक डॉ राम प्रकाश अग्रवाल, डॉ भदेव शर्मा, प्रो. राम चौधरी, डॉ. विजय मेहता, डॉ. सुषम वेदी, डॉ अंजना अधीर आदि लेखकों ने पत्रिकाओं में काम किये। विभिन्न देशों में अमेरिका अपने आप में पहला देश है। क्योंकि वहाँ पर तीन पत्रिका प्रकाशित हो चुकी है। जो इस प्रकार है। बाल हिंदी जगत पत्रिका न्यूयार्क की अंचला सोब्रिन सम्पादित कर रही हैं। और दसरा विज्ञान प्रकाश जो कि प्रो. राम चौधरी जो स्वयं अपने आप में वैज्ञानिक हैं।

2. मॉरीशस का प्रवासी साहित्य–प्रवासी हिंदी साहित्य में मॉरीशस एक ऐसा देश है। जहाँ पर हिंदी लेखन का कार्य किया जाता है। इन देशों में कई पत्रिकाओं का नाम मिलता है। जैसे– बसन्त, पंकज, इन्द्रधनुष, आक्रोश, जनवाणी, आदि का योगदान रहा है। यह एक ऐसा देश है जिसमें कई विधाओं में लिखी जा रही है। मॉरीशस में हिंदी उपन्यास का आरम्भ 6वें दशक में हुआ। जब 1960 में बिहारी लाल का लघु उपन्यास 'पहला कदम'जो कि बहुत ही चर्चित व प्रसिद्ध है। इसी प्रकार इंग्लैण्ड तथा सूरीनाम के प्रवासी साहित्य की समीक्षा भी मैंने की है। इसके अतिरिक्त मैंने रामदेव धुरंधर , अभिमन्यु अनत तथा अन्य साहित्यकारों का परिचय दिया है । प्रवासी साहित्य में कविता, कहानी , नाटक और उपन्यास इत्यादि विभिन्न विधाओं के उद्देश्य को दिखाने का प्रयत्न किया है।

द्वितीय अध्याय में मैंने रामदेव धुरंधर के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला है। रामदेव धुरंधर ने मॉरीशस में जन्म लेकर हिंदी को जिया है और अपने इस जीवन को अपना स्वाभिमान मानते है। उनके परदादा भारत के एक मजदूर के रूप में मॉरीशस गये थे और उनका जीवन यहाँ पर बहुत ही अधिक तनावपूर्ण, संकटग्रस्त रहा। फिर भी वहाँ उन्होंने उच्च कोटि का हिंदी साहित्य रचा। जिस समय वह मॉरीशस की धरती पर हिंदी में लिखकर कृतियाँ प्रकाशित करने लगे उसी समय उसके व्यक्तित्व में निखार आने लगा। उनके निखरे हुए व्यक्तित्व को कई सम्मान प्राप्त हुए। 11 जून , कारोलीन , मॉरीशस में जन्मे रामदेव धुरंधर प्रसिद्ध साहित्यकार है। उन्हें **हिंदी भाषा सम्मान (सरोज संघ, मॉरीशस), दुष्यंत कुमार स्मारक सम्मान** (दुष्यंत कुमार संग्रहालय, भोपाल), **विश्व हिंदी रत्न** (आधारशिला विश्व हिंदी मिशन , नैनीताल), हजारीप्रसाद

द्विवेदी सम्मान , नैनीताल इत्यादि सम्मान उपलब्ध हुए। उनका कृतित्व इस तरह है–

उपन्यास– चेहरों का आदमी, छोटी मछली बड़ी मछली, पूछो इस माटी से, बनते बिगड़ते रिश्ते, पथरीला सोना, विराट गली के वाशिंदे, ढलते हुए रोशनी

कहानी संग्रह– विष–मंथन, जन्म की एक भूल व्यंग्य संग्रह कलजुगी धरम, चेहरों के झमेले, पापी स्वर्ग, बंदे आगे भी देख

लघुकथा संग्रह–चेहरे मेरे तुम्हारे, यात्रा साथ–साथ, एक धरती एक आकाश, आते–जाते लोग

मेरा शोध कार्य उपन्यासों पर है अतः मैंने रामदेव धुरंधर के उपन्यासों का सामान्य परिचय निम्नांकित दिया है, जो इस प्रकार है–**'चेहरों का आदमी', 'बड़ी मछली छोटी मछली', 'बनते बिगड़ते रिश्ते', 'पथरीला सोना'** (छः खण्डों में), **विराट गली के वाशिंदे, ढलते सूरज की रोशनी**

'चेहरों का आदमी' यह एक ऐसा उपन्यास है जिसमें किसी आदमी का चेहरा स्पष्ट रूप से मिलता है। कि वे व्यक्ति कौन हैं। जो भारतीय संस्कृति सभ्यता का परिचय दे रहा है। और यह उपन्यास भारतीय जमीनी स्तर पर आदमी को पहचाना जा रहा है। चाहें वह गिरमिटिया मजदूर क्यों न हो जिनको शर्त बंदीपूर्वक काम करवाया जाता था। फिर भी 'बड़ी मछली छोटी मछली' एक ऐसा परिकल्पनात्मक उपन्यास है। जो राजकमल से प्रकाशित हुआ है जो व्यंग्य से भरा हुआ है। जो उन लोगों के लिए व्यंग्य साबित होता है। सामाजिक जीव के सन्दर्भ में संस्कृतियों के विविध आयाम को देखने को मिलता है। जो समाज की सुन्द कल्पना प्रदान करते हैं। उनका अगला उपन्यास 'पूछो इस माटी से यह उपन्यास भा से विदेशों तक के जमीन से जुड़ा हुआ है। यह मिट्टी भारतीय और विदेश की धरती चेतना है। भारतीय मिट्टी, समाज और संस्कृति के आलम्बन का उद्बोधन है। उसके बाद का उपन्यास **'बनते बिगड़ते रिश्ते'** इस उपन्यास में मानव का मन मुटाव, लगाव और. प्रतिस्पर्धा का संकेत है। इस में व्यक्ति कब कहाँ और कैसे बिगड़ जाते हैं। इसका कोई थाह और पता ही नहीं है। फिर भी रिश्ते चाहे भारत से हो या विदेशों से हों, आपस में एक मानवीय सभ्यता होनी चाहिए। राम देव धुरंधर जी यह बताना चाहते हैं कि समाज में किस तरह से रिश्ता टूटता और बनता है। इसका अन्दाज किसी को नहीं है। इनका अन्तिम उपन्यास **'पथरीला सोना'** जो कि बृहद छः खण्डों में विभाजित किया है।

प्रथम खण्ड के अन्तर्गत रामदेव धुरंधर जी ने उस शर्त बन्दी गिरमिटिया मजदूरों का वर्णन किये हैं। जिनको एक मानक के रूप में काम करवाया जाता था और आज भी

गिरमिटियों विदेशों में जाकर काम करवाया जाता था। जैसे ही पाँच वर्ष पूरे होते हैं वैसे ही उन्हें पुनः निकाल दिया जाता था। वे लोग पैसा कमाने की लालच में द्वितीय खण्ड में गिरमिटिया मजदूरों के लिए सहानुभूति तो देते थे। लेकिन वे भारत से कई ग्रन्थों को लेकर सुबह–शाम पूजा पाठ करते थे। **चतुर्थ खण्ड** के अन्तर्गत सोना में गिरमिटियाँ मजदूरों को यू.पी. और बिहार से लाया गया था। क्योंकि इन्हीं को एक शताब्दी गिरमिटियाँ मजदूर के नाम से जानते हैं। वे असहाय मजदूर घर परिवार और आर्थिक समस्याओं को दूर करने के लिए विदेश में काम करने के लिए जाते हैं। ताकि उनके घर समाज दूर हो सकें। यह 1947 के घटनाओं पर आधारित है। क्योंकि कई रचनाकारों ने मॉरीशस की पीड़ा व व्यथा को देख और परखा तो रामदेव धुरंधर जी दोनों का विस्थापन किया। **पंचम खण्ड** के अन्तर्गत रामदेव धुरंधर जी मजदूरों के लिए दुख दर्द को उजाकर किये हैं। ये जमीन को धुरंधर **जब ईख की खेती करते थे तब उसी जमीन** को धुरंधर जी ने पथरीला जमीन को पथरीला सोना का नाम पड़ा। इसलिए वे जमीनी स्तर को देखने के लिए वे कई वर्षों से करते हुए चले आ रहे हैं और ऐसे कुछ पूर्वज हैं जो जमीन के बदले में हमें पत्थर ही मिल जाय तो समझिए की सोना है।

'छठवें खण्ड में' पथरीला सोनाश 2009 में प्रारम्भिक हुआ तथा वे रेखांकित करते हुए कहते हैं कि इस खण्ड में खलनायक पात्र भी हैं तथा इन सभी पात्र को बनाया नहीं, बल्कि वे पहले से ही **खलनायक** जैसे थे। ये समाज में रहकर आँखों में सीधा धूल झोंकते थे। इसलिए लेखक ने 6 खण्डों को बाँध दिया। अर्थात् कुल मिलाकर रामदेव धुरंधर जी के उपन्यासों में सामान्य परिचय यही रहा है। जिन्हें छः खण्डों में समेट लिया गया।

तृतीय अध्याय में मैंने रामदेव धुरंधर के उपन्यासों में भारतीय संस्कृति एवं परिवेश बोध का विश्लेषण किया है। रामदेव धुरंधर के उपन्यासों में भारतीय संस्कृति व परिवेशबोध के अन्तर्गत उनके **रहन–सहन**, पोशाक, धार्मिक त्यौहार, पर्व, बाल विवाह, लोक गीतों में संस्कृति तथा लोक कथाओं में संस्कृति को समझ सकेंगे। क्यों रामदेव धुरंधर के उपन्यासों में कहीं न कहीं मॉरीशस की रीति रिवाज, खान–पान को समझ पायेंगे। वहाँ का धार्मिक उत्सव एक बड़े पैमाने पर मनाया जाता है। जैसे भारत में हर्षोल्लास मनाते हैं। वैसे वहाँ भी मनाते हैं। बस ये है कि आप मॉरीशस से हैं और भारत से यही मन का हेर–फेर है। वहाँ का पहनावा कुछ अजीब है। क्योंकि वे अपने हिसाब से रहते हैं। क्योंकि वहाँ का एक फैशन है। जो सदियों से चला आ रहा है और पर्व त्यौहार की बात करें तो वहाँ भी इसी

CamScanner

तरह मनाते हैं। उनके बाल विवाह व लोकगीत बहुत ही सुन्दर और आकर्षण पूर्ण हैं। वहाँ पर छोटी–छोटी लोककथाएं बहुत मिली हैं। अभी रामदेव धुरंधर जी सोशल मीडिया पर कई लघुकथा और गद्य क्षणिका लिखते रहते हैं। फिर भी उनके उपन्यासों, लोक कथाओं को बड़ी सजीवता से पेश आते हैं। इस सभी का आकलन करते हुए रामदवे धुरंधर जी जब भारतीय संस्कृति व परिवेश बोध से परिचित होते हैं। तब उन्हें लगता है कहीं न कहीं भारतीय पर्व, भारतीय लोकगीत, और भारतीय त्यौहार व पर्व उन्हें खींच लाती है। कई बार भारतीय किये, और इसी संस्कृति के नाम लिखना प्रारम्भ किये।

चौथे अध्याय के अन्तर्गत मैंने रामदेव धुरंधर के उपन्यासो में भारतीय संस्कृति एवं परिवेश बोध **'पूछो इस माटी से',** 'पथरीला सोना', 'विराटमयी के वाशिंदे', 'ढलते सूरज की रोशनी' के संदर्भ में भारतीय संस्कृति तथा परिवेश का मूल्यांकन किया है। रामदेव धुरंधर के उपन्यासों में परिवेश निम्न सन्दर्भो को केन्द्र में रखकर जिक्र किया है। उनके सामाजिक परिवेश, सांस्कृतिक परिवेश, राजनीतिक परिवेश, धार्मिक परिवेश और आर्थिक परिवेश को समझ सकते हैं। फिर भी धुरंधर जी के उपन्यासों में प्रवेश **'चेहरों का आदमी'** से माना जाता है। यह उपन्यास सामाजिक और राजनीतिक दृष्टि से ओत–पोत हैं। इसमें स्वार्थ और भ्रष्ट लोगों का वर्णन किया गया है। जो अपनी स्वार्थ सिद्धी के लिए न जाने कितने चेहरे को धारण किए हैं। और न जाने कितने नकाब बदलते रहते हैं। जेल से मुक्त होने के कारण राजशेखर ने इस उपन्यास की कथा को आगे बढ़ाया है। इसको महत्वपूर्ण पात्र माना गया है। जहाँ तक इसमें राजनीतिक का मुददा है।

यहाँ रामफल राउस को जब नौकरी मिलती है। तब उस समय राजनीतिक दलों ने वोट लेने के लिए आश्वासन दिये। ठीक उसी प्रकार 'छोटी मछली, बड़ी मछली' को सामाजिक दायरे में रहकर सिमट गया है। इस उपन्यास में नायिका विनोद के अन्तद्वन्दों की कथा है। उसी कड़ी में 'पूछो इस माटी से' यह एक ऐतिहासिक उपन्यास जो आर्थिक परिवेश से गुजर रहा है। अर्थात् ये मॉरीशस के पृष्ठभूमि पर लिखा गया है। तथा इन देशों में गिरमिटिया मजदूरों पर गोरे मालिक प अत्याचार करते थे। इस उपन्यास में सामाजिक और आर्थिक परिवेश का साक्षात प्रमाण है। उसका यथार्थ वर्णन करने का मैंने प्रयत्न किया है।

पंचम अध्याय के अन्तर्गत मैंने रामदेव धुरंधर के उपन्यासों की प्रमुख समस्यायों का निरूपण किया है। रामदेव धुरंधर के उपन्यासों में भारतीय संस्कृति व मॉरीशस की संस्कृति

CamScanner

से कम नहीं है। यह भारतीय संस्कृति उन गिरमिटियां मजदूरों के लिए किया जाता है। जिन्होंने विदेश में जाकर उन संस्कृति व सभ्यता का पालन किया हैं। कहीं न कहीं घुरंधर जी को बार–बार स्मरण होता है कि यह भारतीयता की पहचान विदेश में रहकर कहीं और अधिक व्यापक हो जाता है। इन बेचारे गिरमिटियां मजदूर का रहन–सहन खान, पान कुछ अलग ही रहा है। भारत में जो रीति–रिवाज है। वही मॉरीशस में भी देखने को मिलता है। रामदेव धुरंधर जी कहना चाहते हैं कि एक भारत और मॉरीशस के बीच में द्वन्द्व भरा हुआ हैं उनका 'पथरीला सोना' नामक उपन्यासों में चित्रण किया गया है। कहने का आशय यह कि भारतीय संस्कृति का रहन–सहन, खान–पान, शादी–विवाह आदि एक सरल भाव बोध की तरह चलता है। इसलिए वे मॉरीशस के लोगों को बताना चाहते हैं। गिरमिटियां मजदूर भारत से विदेशों में ले जाते हैं। तभी उस समय 'पथरीला सोना' पथरीली जमीन के रूप में फसल उगाते हैं।

भारतीय मदजूदों के उत्पीड़न की समस्या– प्रवासी हिंदी साहित्य में भारतीय मजदूरों के उत्पीड़न की समस्या कहीं अधिक देखने को मिलती है पुनः हमें स्मरण हो रहा है कि ये मजदूर एक लेखक की तरह काम करते हैं। बड़े–बड़े कम्पनी में मेम्बर उनसे काम करवाते थे। यहाँ तक जब उन्हें भारत से विदेशों में ले जाते हैं। तब उन्हें एक शर्त बंदी गिरमिटियां मजदूर की तरह काम करवाया जाता था। क्योंकि वे पैसों की लालच में, आकर रात दिन काम करते। लेकिन जब उस गिरमिटियां मजदूर को गिरोह के रूप में काम करवाया जाता है। उस दौरान उनको शारीरिक व मानसिक रूप से शोषण होता रहा। यह दर्द उन प्रवासी साहित्यकारों को होता है। जिन्होंने गिरमिटियां मजदूर के लिए कदम को उठाया है। ऐसे प्रवासी साहित्यकार को सलाम करता हूँ जिन्होंने गिरमिटियां मजदूर के रूप में सोशल मीडिया से लेकर फेसबुक के साथ ही साथ बुक में परिमार्जिक की जा रही है। यहाँ तक मजदूरों को खेत में काम करने के लिए ठेकों के रूप में काम करवाया जाता था। अतः भारतीय मजदूरों के लिए बहुत बड़ी समस्या रही है।

वतन से दूर होने की समस्या रामदेव धुरंधर जी वतन से दूर होने की समस्या उस दृष्टि से देखते हैं। जिनको अहसास हो सके कि अपनी धरती अपने लोग जब विदेश की धरती पर जाते हैं तब अन्दर ही अन्दर घुटन होने लगती है। यह पीड़ा उन्हें जब अहसास होती है। तब उन्हें महसूस होने लगता कि कब अपने शहर व गाँव निकल जाऊं। लेकिन यह दास्तां इतनी गम्भीर है कि इस भारत भूमि पर वतन से दूर होने के कारण किसी से

CS CamScanner

बयान भी नहीं कर सकते है। लेकिन रामदेव धुरंधर ने उनके पीड़ा को महसूस किया है। तब उन्हें लगता है कि मैंने अपने इस लेखन के कार्य को कहाँ तक पहुँचाया कि उन मजदूरों के दुख–दर्द व पीड़ा के साथ ही साथ उनके उत्पीड़न को आंका व पहचाना जा सके। इसलिए उनके उपन्यासों में उन मजदूरों के लिए अमिट छाप है। क्योंकि वे एक ग्रामीण अंचल से जुड़े होने के कारण जब विदेश की धरती पर पैर रखकर लिखना व बयाँ करना चाहते हैं। तब उन्हें वतन से दूर होने की पीड़ा व दुख दर्द का आभास होता हैं। अतः उनकी पीड़ा उन लोगों में से एक है। जो वतन से दूर हैं। इसके अतिरिक्त नारियों की समस्या, बच्चों की समस्या, वृद्धों की समस्या तथा राजनीतिक समस्याओं का भी विश्लेषण करने का प्रयास मैंने किया है।

छठे अध्याय के अन्तर्गत मैंने रामदेव धुरंधर के उपन्यासों में चित्रित **भावपक्ष एवं कलापक्ष** का विवेचन किया है।

रामेदव धुरंधर के उपन्यासों में कला पक्ष व भाव पक्ष को अलग–अलग रूपों में निरूपित किया गया है। सबसे पहला कला पक्ष के अन्तर्गत उनके उपन्यासों में मॉरीशस के कई शब्द ऐसे हैं। जो भारतीय से बिल्कुल अलग हैं। क्योंकि वहाँ पर ग्रामीण अंचल में शब्द वाचन का प्रयोग व गिरमिटियां मजदूरों शर्त बंदी के रूप में कार्य करवाया जाता है। तब रामदेव धुरंधर कहते हैं कि शब्द में कहीं एक भाव व सौन्दर्य रूपी परिपाटी देखने को मिलती है। क्योंकि यह सौन्दर्य उन उपन्यासों से जुड़ा हुआ है। जिसमें दोनों आपसी सम्बन्ध एक नए मानक के रूप में सौन्दर्य दिखाई पड़ता है। जैसे–'छोटी मछली, बड़ी मछली' को लेकर एक मानक सौन्दर्य जो जमीनी स्तर से नहीं बल्कि जल में रहने वाली मछली की सबसे बड़ी विशेषता सौन्दर्य व कला पक्ष के साथ 'पथरीला सोना' में ग्रामीण अंचल की बोल–चाल व रहन–सहन एवं संस्कृति को एक नए कला पक्ष के साथ जोड़े हैं। ठीक उसी प्रकार रामदेव धुरंधर जी के उपन्यासों में भाव पक्ष का तात्पर्य उन उपन्यासों से है। जो भाव केन्द्रित हों, भाव के साथ भाषा में सरलता का समायोजन करता हो ।

'बनते बिगड़ते रिश्ते' में रामदेव धुरंधर जी कहते हैं कि मैं हिंदी को लेकर विदेशों में उन रिश्तों को भावपक्ष में स्त्री पात्र व पुरुष पात्र के रिश्ते बनते बिगड़ते रहते हैं। क्योंकि भारत में जिन रिश्तों को तय किया जाता है। वैसा ही रिश्ता विदेशों में नहीं हैं। क्योंकि वहाँ की विदेशी रिश्ता एक बार बिगड़ गया तो समझिए की दूसरा रिश्ता तय है। रामदेव धुरंधर जी के उपन्यासों में हिंदी भाषा का प्रयोग मिलता है। जाता है तथा इसके साथ ही

CamScanner

साथ वे रस, छन्द, अलंकार शब्द शक्ति व मुहावरों का प्रयोग किया जाता है जब वे बोलते हैं तो एक लय व ताल बनाकर लिखते हैं।

त्रिलोचन जी कहते हैं कि–

भाव उन्हीं का है

जो थे भाव में

अभाव से दबे रहे

जगे स्वभाव में

यह पंक्ति पथरीला सोना को भाव पक्ष का उद्‌बोधन करती है तथा 150 विश्वविद्यालयों में हिन्दी को केन्द्र में रखकर शिक्षण का कार्य कर रहे हैं। अर्थात् रामदेव घुरंधर जी का कला पक्ष व माव पक्ष का होना एक सौन्दयानुभूति का साक्षात् प्रमाण है। इसमें कोई किसी भी प्रकार सन्देह नहीं हैं।

उपन्यासों की भाषाशैली

प्रवासी हिंदी साहित्य में उपन्यासों की भाषा शैली हिंदी में होने के बावजूद विदेश में अलग–अलग देशों में प्रवासी साहित्यकारों विदेशों में जाकर ब्रज और भोजपुरी के साथ मॉरीशस की भाषा में बोलते हैं। फिर भी रामदेव धुरंधर के उपन्यासों में भोजपुरी बोली के शब्द मिलते हैं। अर्थात् केवल यहाँ तक ही नहीं बल्कि उनके भाषाशैली ठेठ खड़ी बोली में है। भले ही मॉरीशस के साहित्यकार होने के बावजूद विभिन्न भाषाओं का ज्ञानार्जन किया गया हो और आज भी नए–नए पैमाने पर मुहावरा शब्द का प्रयोग जा रहा हैं।

उपन्यासों का भाव सौन्दर्य–रामदेव घुरंधर के उपन्यासों में भाव सौन्दर्य उनके सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक तौर पर भाव सौन्दर्य मिलता है। इसलिए कुछ पाश्चात् विचारकों का मानना है। हर उपन्यास की अपनी भाव व कला होती है कि वे किस धारा में लिख रहे थे। सबसे बड़ी बात होती है। फिर भी हर उपन्यास की अपनी भाषा पर पूर्ण रूप से अधिकार होता है। क्योंकि कि उपन्यासों में भाव, लहजा और अभिप्राय इन तीनों का होना आवश्यक है तथा वे किस लय व ताल में पात्रों से बात करते हैं। ये उनकी परिपाटी होती है। उनको उपन्यासों में राजनीतिक का मुद्दा जो अन्तर्द्वन्द्व की कथा सिमट चुकी हैं।

CamScanner

भारतीय भाषाओं का प्रभाव–प्रवासी हिंदी साहित्य में भारतीय भाषाओं का अधिकार होता है। जहाँ पर हिंदी भाषी लोग हिंदी भाषा को जानते हैं और इससे कहीं और अधिक विदेशों में हिंदी भाषा का अभाव रहा है। कहीं–कहीं विदेशी भाषा का भी प्रयोग किया गया है।

शोध : प्रविधि– प्रस्तुत शोध–प्रबंध में मैंने गुणात्मक अनुसंधान, मात्रात्मक अनुसंधान, विवरणात्मक अनुसंधान, विश्लेषणात्मक अनुसंधान, आधारभूत अनुसंधान, ऐतिहासिक अनुसंधान इत्यादि शोध–प्रविधियों का प्रयोग किया है। वैश्वीकरण के दौर में शोध के द्वारा हर एक शैक्षिक अनुशासन परस्पर संवाद की प्रक्रिया में है। परिणामस्वरूप अन्तरानु शासनात्मक शोध का महत्व बढ़ा है। जिससे विभिन्न शैक्षिक अनुसंधान का परस्पर आदान–प्रदान संभव हुआ है।

मेरे इस शोध–प्रबंध के अंत में मैंने उपसंहार ,आलेख , पत्र–पत्रिकाओं ,संदर्भ ग्रन्थ की सूची देने का प्रयत्न किया है।

संदर्भ ग्रन्थ

1. विश्व हिंदी संरचना –सं. कमल किशोर गोयनका .

2 . अभिमन्यु अनत .समग्र कविताएँ. सं. कमल किशोर गोयनका

3. प्रवासी पुत्र .डॉ–पद्मेश गुप्त.वाणी प्रकाशन नयी दिल्ली

4. वर्किंग पार्टनर . उषा राजे सक्सेना . राधाकृष्ण प्रकाशन दिल्ली

5. प्रवासी भारतीयों की हिंदी सेवा . डॉ. कैलाश कुमारी सहाय, अविराम प्रकाशन दिल्ली

6. संस्कृति के चार अध्याय रामधारी सिंह दिनकर –लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद

7. मॉरीशस में हिंदी की स्थिति .डॉ. उदयनारायण गंगू

8. मॉरीशस में हिंदी साहित्य का इतिहास .श्री जयनारायण रॉय

9. अनत अभिमन्यु ,1993 ,वसंत चयनिका मॉरीशस रू महात्मा गांधी संस्थान

10. हिंदी की विश्व यात्रा प्रो.सुरेश ऋतुपर्ण

CS CamScanner

11. पंचशील शोध समीक्षा .डॉ. हेतु भारद्वाज

12. हिंदी के प्रवासी साहित्य की परंपरा. डॉ.स्वर्णलता

13. मॉरीशसय हिंदी भाषा और साहित्य .डॉ. सतीश चन्द्र अग्रवाल

14. लोकसंस्कृति की रूपरेखा डॉ कृष्णदेव उपाध्याय

15. हम प्रवासी . अभिमन्यु अनत 16 नारी क्या है . बिंदु सिन्हा

17. अमेरिका – अर्चना पंडा

18. मॉरीशस का हिंदी साहित्य रू एक परिचय. डॉ. मुनीश्वर चिंतामणि

19. 21 वी सदी का हिंदी साहित्य – डॉ ललिता राठोड

20. संस्कृति के चार अध्याय . हजारीप्रसाद द्विवेदी

21. चलो फिर एक बार .डॉ. अंजना संधीर

22. वतन उषा देव

23. प्रवासियों में हिंदी दशा और दिशा . सुषम बेदी

24. मूल्य और हिंदी उपन्यास डॉ.हेमराज कौशिक

25. प्रवासी लौट आयो.सावित्री शर्मा

26. विश्व भाषा हिंदी .सं. वशिनी शर्मा केन्द्रीय संस्थान आगरा

27. प्रवासी हिंदी साहित्य तथा साहित्यकार डॉ. पी.पाटिल

28 . शिवराम आक्टे, संस्कृत हिंदी कोश, दिल्ली मोती लाल बनारसीदास, 1985 संस्कर

29 . रामचन्द्र वर्मा (सम्पादक) लोक भारती प्रमाणिक हिंदी कोश भारती, तृतीय संस्करण 1996

30. श्यामसुन्दर दास (सम्पादक) विदेशी शब्द सागर (खण्ड–4) प्रयाग काशी नगरी प्रचारणीय सभा।

31. गोविन्द चाटक बृद्ध हिंदी पर्यावाची शब्द कोश तक्षशीला प्रकाशन, नई दिल्ली

32 . केहर शरीफ प्रवास चुनौतियां व संभारक परिवर्तन www-ajitweekly-com 27 2008

33. रामदेव धुरंधर कृत 'पथरीला सोना', वाणी प्रकाशन 2014

CamScanner

34. रामदेव धुरंधर कृत 'चेहरे का आदमी', पूर्वोदय प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रकाशन 1981

35. रामदेव धुरंधर कृत 'छोटी मछली बड़ी मछली', राजकमल प्रकाशन, प्रकाशन 1983, नई दिल्ली

36. रामदेव धुरंधर कृत 'पूछो इस माटी से', नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली

37. रामदेव धुरंधर कृत 'बनते बिगड़ते रिश्ते', प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, प्रकाशन 1990, नई दिल्ली

38. रामदेव धुरंधरकृत, विराट गली के बाशिंदे, आधारशिला प्रकाशन

39. रामदेव धुरंधरकृत, ढलते सूरज की रोशनी, सामाजिक प्रकाशन, प्रकाशनार्थ 27 मई, 2019, नई दिल्ली

पत्र–पत्रिकाएँ

1. 'वसंत' त्रैमासिक, महात्मा गांधी संस्थान, मॉरीशस की पत्रिका

2. 'प्रवासी संसार' त्रैमासिक मॉरीशस

3. 'विश्व विवेक' त्रैमासिक .अमेरिका

4. 'अभिव्यक्ति' वेब पत्रिका

5. 'धर्मयुग' भारत

6. विशाल भारत, प्रवासी अंक .कलकत्ता

7. 'विश्व हिंदी पत्रिका', विश्व हिंदी सचिवालय 2010

8. विश्व की हिंदी पत्र–पत्रिकाएँ .डॉ. कामता कमलेश

9. अकादमी की द्विमासिक पत्रिका समकालीन भारतीय साहित्य अकादमी

10. प्रवासी काव्य संचयन , आजकल (मासिक) जनवरी 2016 नई दिल्ली

CamScanner

This document was created with the Win2PDF "print to PDF" printer available at
http://www.win2pdf.com

This version of Win2PDF 10 is for evaluation and non-commercial use only.

This page will not be added after purchasing Win2PDF.

http://www.win2pdf.com/purchase/

CamScanner